٣٠٠ حديث من الصحيحين - هندي

बुख़ारी और मुस्लिम की 300 हदीसें

جمعية الدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات بالزلفي

234 هاتف: ٠١٦ ٤٢٣٤٤٦٦ . فاكس: ٠١٦ ٤٢٣٤٤٧٧

جمعية الدعوة بالزلفي

बुखारी और मुस्लिम की 300 हदीसें

300 حديث من الصحيحين

أعده وترجمه إلى اللغة الهندية

جمعيةالدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

الطبعة الثانية : ٨ / ١٤٤٢ هـ

ح المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالزلفي

300 حديث من الصحيحين - الزلفي، ١٤٤١هـ

١٤٠ ص ؛ ١٢×١٧ .سم

ردمك: ٠-٢٢-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

أ. العنوان ١- الحديث – جوامع الفنون

٢٢٧ / ١٤٤١ ديوى ٢٣٧,٣

رقم الإيداع: ٢٢٧/ ١٤٤١

ردمك: ٠-٢٢-٨٢٤٣-٦٠٣-٩٧٨

300 حديث من الصحيحين

बुख़ारी और मुस्लिम की 300 हदीसें

١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «كَلِمَتَانِ خَفِيْفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيْلَتَانِ فِي الْمِيْزَانِ ، حَبِيْبَتَانِ إِلَى الرَّحْمٰنِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، (٦٤٠٦، ٢٦٩٤]

1. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: दो कलिमे जुबान पर हलके हैं, तराजू में वज़नी हैं, रहमान के नज़दीक प्रिय हैं। सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही, सुबहान ल्लाहिल अज़ीम (बुखारी, 6406. मुस्लिम, 2694)

٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلٰى رَسُوْلِ الله ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُوْلَ الله! مَنْ أَحَقُّ النَّاسِ بِحُسْنِ صَحَابَتِي ؟ قَالَ: «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ : «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ: «أُمُّكَ» قَالَ: ثُمَّ مَنْ ؟ قَالَ: «ثُمَّ أَبُوْكَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٥٩٧١، ٢٥٤٨]

2. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे ज़्यादा हकदार (पात्र) कौन

है? आप ने फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारी मां, पूछा फिर कौन? फरमायाः तुम्हारे बाप। (बुखारी 5971 मुस्लिम, 2548)

٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: «إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الحَدِيْثِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْه ، ٦٠٦٦]

3. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बदगुमानी से बचो, निसन्देह बदगुमानी सबसे झूठी बात है। (बुखारी, 6066)

٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّ الْعَبْدَ لَيَتَكَلَّمُ بِالْكَلِمَةِ مَا يَتَبَيَّنُ فِيْهَا ، يَزِلُّ بِهَا فِي النَّارِ أَبْعَدَ مَا بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ»[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٢٩٨٨، ٦٤٧٧]

4. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दा बिना सोचे समझे ऐसी बात कह देता है जिसकी वजह से वह जहन्नम में इतनी गहराई में पहुंच जाता है जितनी पश्चिम और पूर्व की दूरी है। (बुखारी, 6477 मुस्लिम 2988)

٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺأَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ:«إِنَّ اللهَ يَغَارُ،وَغَيْرَةُ اللهِ أَنْ يَأْتِيَ الْمُؤْمِنُ مَا حَرَّمَ اللهُ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ،٢٧٦١، ٥٢٢٣]

5. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह को भी गैरत आती है। और अल्लाह की गैरत यह है जब मोमिन अल्लाह की हराम की हुयी चीज़ों को करता है। (बुखारी, 5223 मुस्लिम, 2761)

٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ قَامَ رَمَضَانَ إِيمَانًا وَّاحْتِسَابًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٣٧، ٧٥٩]

6. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने ईमान और नेक निय्यती के साथ रमज़ान में क़्याम किया उसके पिछले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे। (बुखारी, 37 मुस्लिम, 759)

٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «اَلْعُمْرَةُ إِلَى الْعُمْرَةِ كَفَّارَةٌ لِمَا بَيْنَهُمَا، وَالْحَجُّ الْمَبْرُوْرُ لَيْسَ لَهُ جَزَاءٌ إِلَّا الْجَنَّةَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ١٣٤٩ ، ١٧٧٣]

7. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक उमरा दुसरे उमरा के बीच के गुनाहों को मिटा देता है और हज्जे मबरूर का बदला जन्नत है। (बुखारी 1773 – मुस्लिम 1349)

٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرة ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «اَلتَّثَاؤُبُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا تَثَاءَبَ أَحَدُكُمْ فَلْيَرُدَّهُ مَا اسْتَطَاعَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٣٢٨٩، ٢٩٩٤]

8. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाइ शैतान की तरफ से आती है, इसलिये जब तुम में से किसी को जमाइ आये तो अपनी ताकत भर उसे लौटा दे। (बुखारी 3289 – मुस्लिम 2994)

٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «اَلسَّاعِي عَلَى الأَرْمَلَةِ وَالمِسْكِينِ كَالمُجَاهِدِ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ، وَأَحْسَبُهُ قَالَ: وَكَالقَائِمِ الَّذِيْ لَا يَفْتُرُ وَكَالصَّائِمِ لَا يُفْطِرُ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦٠٠٧، ٢٩٨٢]

9. अबू हुरैरह रजिअल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः विधवा और यतमीमों के काम आने वाला अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले की तरह है और मेरा ख्याल है कि आपने फरमायाः रात में उस तहज्जुद की नमाज पढ़ने वाले की तरह है जो थकता नहीं है और उस रोज़े दार की तरह है जो बराबर रोज़ा रखे। (बुखारी, 6007 – मुस्लिम, 2982)

١٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺأَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: «مَا يُصِيبُ الْمُسْلِمَ مِنْ نَصَبٍ وَلَا وَصَبٍ وَلَا هَمٍّ وَلَا حَزَنٍ وَ لَا أَذَىً وَلَا غَمٍّ حَتَّى الشَّوْكَةَ يُشَاكُهَا إِلَّا كَفَّرَ اللهُ بِهَا مِنْ خَطَايَاهُ».[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٥٦٤١، ٢٥٧٣].

10. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान को जो भी, थकान, बीमारी रंज व गम, तकलीफ पहुचती है यहां तक कि कांटा चुभता है तो अल्लाह इसकी वजह से उसके गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी, 5641 – मुस्लिम, 2573)

١١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺأَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: «حَقُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ خَمْسٌ رَدُّ السَّلَامِ وَعِيَادَةُ الْمَرِيضِ وَاتِّبَاعُ الْجَنَائِزِ وَإِجَابَةُ الدَّعْوَةِ وَتَشْمِيتُ الْعَاطِسِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ١٢٤٠، ٢١٦٢]

11. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर पांच अधिकार हैं, सलाम का जवाब देना, बीमार का हाल चाल मालूम करना, जनाज़े में हाज़िर होना, दावत को कुबूल करना और छींकने वाले का जवाब देना। (बुखारी, 1240 – मुस्लिम, 2162)

١٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ شَهِدَ الْجَنَازَةَ حَتَّى يُصَلِّيَ عَلَيْهَا فَلَهُ قِيرَاطٌ وَمَنْ شَهِدَهَا حَتَّى تُدْفَنَ فَلَهُ قِيرَاطَانِ» قِيلَ وَمَا الْقِيرَاطَانِ قَالَ «مِثْلُ الْجَبَلَيْنِ الْعَظِيمَيْنِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ١٣٢٥، ٩٤٥].

12. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो जनाज़े में हाज़िर हुआ और नमाज़ पढ़ी तो उसके लिये एक क़ीरात है, और जो जनाज़े में दफन किये जाने तक हाज़िर रहा उसके लिये दो क़ीरात है। आपसे पूछा गया कि यह दो क़ीरात क्या हैं? आपने फरमाया दो बड़े पहाड़ी के समान। (बुखारी 1325 – मुस्लिम 945)

١٣- عن أبي هريرة ﷺ قال: «مَا عَابَ النَّبِيُّ ﷺ طَعَامًا قَطُّ إِنِ اشْتَهَاهُ أَكَلَهُ وَإِنْ كَرِهَهُ تَرَكَهُ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٥٤٠٩، ٢٠٦٤].

13. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किसी खाने पर कभी ऐब नहीं लगाया अगर खाना चाहते तो खा लेते और अगर पसन्द नहीं करते तो नहीं खाते थे। (बुखारी 5409 – मुस्लिम 2064)

١٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «حُجِبَتِ النَّارُ بِالشَّهَوَاتِ، وَحُجِبَتِ الْجَنَّةُ بِالمَكَارِهِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٦٤٨٧].

14. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहन्नम इच्छाओं से घिरी हुयी है और जन्नत मशक्कतों से घिरी हुयी है। (बुखारी 6487)

١٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ«إِذَا قُلْتَ لِصَاحِبِكَ يَوْمَ الجُمُعَةِ أَنْصِتْ،وَالإِمَامُ يَخْطُبُ،فَقَدْ لَغَوْتَ»[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٩٣٤، ٨٥١]

15. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुमा के दिन इमाम के खुतबा देने के वक्त में जब तुमने अपने साथी से खामूश रहने के लिये कहा तो हक़ीक़त में तुम ने फुजूल बात की। (बुखारी 934 – मुस्लिम 851)

١٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«لَوْلَا أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لَأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ عِنْدَ كُلِّ صَلَاةٍ».[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٨٨٧، ٢٥٢]

16. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयन करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मेरी उम्मत पर कठिन न होता तो मैं उन्हें हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक़ करने का हुक्म देता। (बुखारी 887 – मुस्लिम 252)

١٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «وَيْلٌ لِلْأَعْقَابِ مِنَ النَّارِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ١٦٥، ٢٤٢].

17. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः (ख़ुश्क) एड़ियों के लिये आग का अज़ाब है। (बुखारी 165–मुस्लिम 242)
यानी वुज़ु करते वक्त कोई भी अंग सुखा ना रहे वरना अज़ाब का कारण बनेगा

١٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «أَمَا يَخْشَى الَّذِيْ يَرْفَعُ رَأْسَهُ قَبْلَ الإِمَامِ أَنْ يُحَوِّلَ اللهُ رَأْسَهُ رَأْسَ حِمَارٍ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦٩١، ٤٢٧]

18. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो नमाज़ में अपने सर को इमाम से पहले उठा लेता है उसके बारे में डर है कि कहीं अल्लाह तआला उसके सर को गधे के सर की तरह न बना दे। (बुखारी 691 – मुस्लिम 427)

١٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ:«مَنْ غَدَا إِلَى الْمَسْجِدِ أَو رَاحَ، أَعَدَّ اللهُ لَهُ فِي الْجَنَّةِ نُزُلًا، كُلَّمَا غَدَا أَوْ رَاحَ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦٦٢، ٦٦٨]

19. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स सुबह व शाम मस्जिद जाता है अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में मेहमान नवाज़ी के सामान तैयार कर देता है जब जब वह मस्जिद जाता है । (बुखारी 662 – मुस्लिम 669)

٢٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ «آيَةُ الْمُنَافِقِ ثَلَاثٌ : إِذَا حَدَّثَ كَذَبَ، وإِذَا وَعَدَ أَخْلَفَ ، وَإِذَا اؤْتُمِنَ خَانَ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٣٣، ٥٩]

20. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुनाफिक़ की तीन पहचान है जब बात करे तो झूठ बोले, वादा करे तो वादा तोड़े और जब उसके पास कोई अमानत रखी जाये तो उसमें ख़्यानत करे। (बुखारी 33 – मुस्लिम 59)

٢١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَا أَسْفَلَ مِنَ الكَعْبَيْنِ مِنَ الإِزَارِ فَفِي النَّارِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٥٧٨٧].

21. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः टख़नों से नीचे तहबन्द का जो हिस्सा लटका हुआ होगा वह जहन्नम में जाने का कारण होगा। (बुख़ारी 5787)

٢٢-عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«اَلْمَلَائِكَةُ تُصَلِّي عَلَى أَحَدِكُمْ مَادَامَ فِي مُصَلَّاهُ الَّذِي صَلَّى فِيهِ مَا لَمْ يُحْدِثْ،تَقُوْلُ:اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ ،اَللّٰهُمَّ ارْحَمْهُ»[مُتَّفَقٌ عَلَيْه ، ٤٤٥ ،٦٤٩].

22. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फरिश्ते तुम में से हर किसी को दुआ देते हैं जब तक कि वह अपने नमाज़ पढ़ने की जगह में बैठा रहे और यह सिलसिला उस वक्त तक बाकी रहता है जब तक कि उसको तहारत की ज़रूरत न पड़ जाये फरिश्ते कहते हैं ऐ अल्लाह उसकी मगफिरत फरमा और उस पर रहम कर। (बुखारी 445)

٢٣-عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُوْنَ الجَنَّةَ إِلَّا مَنْ أَبَى»،قَالُوا:يَا رَسُولَ الله،وَمَنْ يَأْبَى؟ قَالَ:«مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى»[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٧٤٨٠، ١٨٣٥].

23. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरी उम्मत में से हर कोई जन्नत में जायेगा लेकिन जिसने इनकार किया सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल इन्कार करने वाला कौन है? आप ने फरमाया : जिसने मेरी पैरवी की वह जन्नत में जायेगा और जिसने

मेरी नाफरमानी की उसने इनकार किया। (बुखारी 7480 मुस्लिम 1835)

٢٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «إِذَا قَالَ الرَّجُلُ لِأَخِيْهِ يَا كَافِرُ، فَقَدْ بَاءَ بِهِ أَحَدُهُمَا» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦١٠٣، ٦٠]

24. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब आदमी अपने भाई को काफिर कहता है तो उन दोनों में से कोई एक इसका (काफिर) कहे जाने का पात्र बन जाता है। (बुखारी, 6103 मुस्लिम, 60)

٢٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «للهُ أَشَدُّ فَرَحًا بِتَوْبَةِ أَحَدِكُمْ، مِنْ أَحَدِكُمْ بِضَالَّتِهِ، إِذَا وَجَدَهَا». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٢٦٧٥].

25. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तुम में से किसी के तौबा कर लेने पर बहुत खुश होता है जैसे तुम में से कोई अपनी गुमशुदा ऊंटनी के पा जाने पर खुश होता है। (मुस्लिम, 2675)

٢٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «لَا تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ حَتَّى تُؤْمِنُوا، وَلَا تُؤْمِنُوا حَتَّى تَحَابُّوا، أَوَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى شَيْءٍ إِذَا فَعَلْتُمُوْهُ تَحَابَبْتُمْ؟ أَفْشُوا السَّلَامَ بَيْنَكُمْ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٥٤].

26. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम उस वक्त तक जन्नत में नहीं जा सकते जब तक कि ईमान न ले आओ, और उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मुहब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें एक ऐसी चीज़ न बताऊं जिसके करने से तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगोगे? अपने बीच में सलाम को फैलाओ। (मुस्लिम, 54)

٢٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «اَلصَّلَوَاتُ الْخَمْسُ، وَالْجُمُعَةُ إِلَى الْجُمُعَةِ ، وَرَمَضَانُ إِلَى رَمَضَانَ ، مُكَفِّرَاتُ مَا بَيْنَهُنَّ، إِذَا اجْتُنِبَتِ الكَبَائِرُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٣٣].

27. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः पांचों नमाज़ें और एक जुमा से दूसरे जुमा तक और एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक इनके दर्मियान में होने वाले गुनाहों के लिये कफ्फारा हैं शर्त यह है कि कबीरा (बड़े बड़े) गुनाहों से बचा जाये। (मुस्लिम, 233)

٢٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «أَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ رَمَضَانَ شَهْرُ الله الْمُحَرَّمُ،وَأَفْضَلُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الفَرِيضَةِ،صَلَاةُ اللَّيْلِ».[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ١١٦٣]

28. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रमज़ान के बाद सबसे अफज़ल रोज़ा अल्लाह का महीना मुहर्रम का रोज़ा है और फर्ज़ नमाज़ों के बाद सबसे अफज़ल नमाज़ रात की नमाज़ है। (मुस्लिम, 1163)

٢٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا، تَابَ اللهُ عَلَيْهِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٢٧٠٣].

29. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस शख्स ने सूरज के उसके पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल करेगा। (मुस्लिम, 2703)

٣٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «جُزُّوا الشَّوَارِبَ وَأَرْخُوا اللِّحٰى، خَالِفُوا الْمَجُوْسَ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٢٦٠].

30. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मोछों को छोटा करो, दाढ़ी को बढ़ाओ, मजूसियों की मुखालिफत करो। (मुस्लिम, 260)

٣١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «لَأَنْ أَقُوْلَ : سُبْحَانَ الله ، وَالْحَمْدُ لله، وَلَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ، وَاللهُ أَكْبَرُ ، أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَا طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٦٩٥]

31. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैं सुबहानल्लाह वलहम्दुलिल्लाह व लाइलाहा इल्लल्लाह वल्लाहु अकबर कहूं। यह मेरे लिये दुनिया की तमाम चीज़ों से ज़्यादा प्रिय है जिसपर सुरज निकलता है। (मुस्लिम, 2695)

٣٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلَاحَ فَلَيْسَ مِنَّا ، وَمَنْ غَشَّنَا فَلَيْسَ مِنَّا». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ١٠١]

32. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारे खिलाफ हथियार उठाया तो वह हम में से नहीं है और जिसने हम को धोखा दिया तो वह हम में से नहीं है। (मुस्लिम, 101)

٣٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «إِذَا مَاتَ الْإِنْسَانُ اِنْقَطَعَ عَنْهُ عَمَلُهُ إِلَّا مِنْ ثَلَاثَةٍ: إِلَّا مِنْ صَدَقَةٍ جَارِيَةٍ، أَوْ عِلْمٍ يُنْتَفَعُ بِهِ، أَوْ وَلَدٍ صَالِحٍ يَدْعُو لَهُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ١٦٣١]

33. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब इन्सान मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है मगर तीन चीज़ों का सवाब उसे मिलता रहता हैः सदकए जारिया, वह ज्ञान जिस से फाइदा उठाया जाये और नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे। (मुस्लिम, 1631)

٣٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «لَقِّنُوا مَوْتَاكُم: لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ»

[رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٩١٦]

34. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने मृत्यु के करीब पहुंचने वाले आदमी को लाइलाहा इल्लल्लाह की तलकीन करो (मुस्लिम, 916)

٣٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ١٢٩١، ٣]

35. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने जान बूझ कर मेरे ऊपर झूठ गढ़ा तो उसका ठिकाना जहन्नम है। (बुखारी, 1291 मुस्लिम, 3)

٣٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ دَعَا إِلَى هُدًى، كَانَ لَهُ مِنَ الْاَجْرِ مِثْلُ أُجُوْرِ مَنْ تَبِعَهُ ، لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ أُجُوْرِهِمْ شَيْئًا ، وَمَنْ دَعَا إِلَى ضَلَالَةٍ كَانَ عَلَيْهِ مِنَ الْإِثْمِ،مِثْلُ آثَامِ مَنْ تَبِعَهُ،لَا يَنْقُصُ ذَلِكَ مِنْ آثَامِهِمْ شَيْئًا».

[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٦٧٤]

36. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: जिसने नेकी की तरफ बुलाया उसके लिये उसी तरह का बदला है जिसने इस नेकी को अपनाया उनके सवाब से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। और जिसने बुराई की तरफ बुलाया तो उसको उसी जैसा गुनाह मिलेगा जिसने इस बुराई पर अमल किया उनके गुनाहों में से कुछ भी कम नहीं किया जायेगा। (मुस्लिम, 2674)

٣٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «قَالَ اللهُ تَبَارَكَ وتَعَالَى: أَنَا أَغْنَى الشُرَكَاءِ عَنِ الشِّرْكِ ، مَنْ عَمِلَ عَمَلًا أَشْرَكَ فِيْهِ مَعِيَ غَيْرِيْ، تَرَكْتُهُ وَشِرْكَهُ».[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٩٨٥]

37. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला कहता है मैं शिर्क करने वालों के शिर्क से बेनियाज हूं जिसने कोई ऐसा कर्म किया जिस में

मेरे साथ दूसरे को साझी बनाया तो मैं उसको भी छोड़ दूंगा और उसके शिर्क को भी छोड़ दूंगा। (मुस्लिम 2985)

٣٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً ، صَلَّى اللهُ عَلَيهِ عَشْراً». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٤٠٨]

38. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मुझ पर एक बार दरूद भेजता है अल्लाह उसके उपर दस रहमतें नाजिल फरमाता है। (मुस्लिम, 408)

٣٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «كُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَى الْمُسْلِمِ حَرَامٌ، دَمُهُ ، وَمَالُهُ ، وَعِرْضُهُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٢٥٦٤]

39. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मुसलमान का दूसरे मुसलमान पर उस का खून उसका माल और उसकी इज्ज़त हराम है। (मुस्लिम, 2564)

٤٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«مَا نَقَصَتْ صَدَقَةٌ مِنْ مَالٍ،وَمَا زَادَ اللهُ عَبْدًا بِعَفْوٍ إِلَّا عِزًّا،وَمَا تَوَاضَعَ أَحَدٌ للهِ إِلَّا رَفَعَهُ اللهُ».[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ،٢٥٨٨]

40. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सदक़ा करने से माल में किसी तरह की कमी नहीं होती और अल्लाह तआला बन्दे को मआफ करने से उसकी इज्ज़त में बढ़ोतरी कर देता है और जो अल्लाह के लिये झुकता है तो अल्लाह उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम, 2588)

٤١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ:«تَدْرُونَ مَا الْغِيْبَةُ ؟» قَالُوا: اللهُ وَرَسُوْلُهُ أَعْلَمُ، قَالَ: «ذِكْرُكَ أَخَاكَ بِمَا يَكْرَهُ»،قِيْلَ:أَفَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ فِيْ أَخِي مَا أَقُوْلُ؟ قَالَ: «إِنْ كَانَ فِيْهِ مَا تَقُوْلُ فَقَدِ اغْتَبْتَهُ، وِإِنْ لَمْ يَكُنْ فِيْهِ فَقَدْ بَهَتَّهُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٥٨٩]

41. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या तुम जानते हो गीबत क्या है? सहाब–ए–किराम ने कहाः अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अपने भाई का जिक्र इस तरह करो जिसको वह नापसन्द करे। पूछा गया आप का क्या ख्याल है अगर उसके अन्दर वह बातें पायीं जायें जो मैं ने कही हैं? फरमायाः जो बातें तुम ने कही हैं, अगर उसमें पायी जायें तो यही गीबत है और अगर न पायी जायें तो वास्तव में तुम ने उस पर झूठा आरोप लगाया। (मुस्लिम, 2589)

٤٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«سَبَقَ الْمُفَرِّدُوْنَ» قَالُوا: وَمَا الْمُفَرِّدُوْنَ،يَا رَسُولَ الله؟ قَالَ:«اَلذَّاكِرُوْنَ اللهَ كَثِيْرًا،وَالذَّاكِرَاتُ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٦٧٦]

42. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुफर्रिदून आगे बढ़ गये। लोगों ने पूछा मुफर्रिदून कौन हैं? फरमायाः अल्लाह को ज्यादा से ज्यादा याद करने वाले मर्द और औरतें। (मुस्लिम, 2676)

٤٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «إِنَّ اللهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَ أَمْوَالِكُم ، وَلَكِنْ يَنْظُرُ إِلَى قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٥٦٤]

43. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेषक अल्लाह तआला तुम्हारी शक्ल व सूरत और माल की तरफ नहीं देखता है बल्कि वह तुम्हारे दिलों और आमाल को देखता है। (मुस्लिम, 2564)

٤٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ:«لَا تَجْعَلُوا بُيُوْتَكُمْ مَقَابِرَ،إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْفِرُ مِنَ الْبَيْتِ الَّذِي تُقْرَأُ فِيْهِ سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٧٨٠]

44. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अललाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः तुम अपने घरों को कब्रस्तान न बनाओ, बेशक शैतान उस घर से भाग जाता है जिसमें सूरह बक़रा पढ़ी जाती है। (मुस्लिम, 780)

٤٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَدْخُلُ الْجنَّةَ مَنْ لَا يَأمَنُ جَارُهُ بَوائِقَهُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٤٦]

45. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह षख्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसकी बुराइयों से उसका पड़ोसी सुरिक्षत न हो। (मुस्लिम, 46)

٤٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: «أَقْرَبُ مَا يَكُونُ العَبْدُ مِنْ رَبِّهِ وَهُوَ سَاجِدٌ؛ فَأَكْثِرُوا الدُّعَاءَ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٤٨٢]

46. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सजदे में बन्दा अपने रब से बहुत करीब होता है इस लिये ज्यादा से ज्यादा दुआ करो। (मुस्लिम, 482)

٤٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ اللهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ سَلَكَ طَرِيْقًا يَلْتَمِسُ فِيْهِ عِلْمًا سَهَّلَ اللهُ لَهُ بِهِ طَرِيْقًا إِلَى الجنَّةِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٢٦٩٩]

47. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः जो शख्स इल्म हासिल करने के लिये चला अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में जाने का रास्ता आसान कर देगा। (मुस्लिम, 2699)

٤٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «إِنَّ اللهَ يَقُوْلُ يَوْمَ القِيَامَةِ: أَيْنَ المُتَحَابُّوْنَ بِجَلَالِي ، اَليَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي ،يَوْمَ لَاظِلَّ إِلَّا ظِلِّي» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٥٦٦]

48. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह क्यामत के दिन कहेगा मेरी अजमत व जलाल के लिए मुहब्बत करने वाले कहां हैं, आज के दिन मैं उनको अपनी छाया में कर लूंगा, इस दिन मेरी छाया के सिवा कोई छाया नहीं होगी। (मुस्लिम 2566)

٤٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «إِذَا أُقِيْمَتِ الصَّلَاةُ ، فَلا صَلَاةَ إِلَّا المَكْتُوْبَة ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٧١٠]

49. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये इक़ामत कही जाये तो फर्ज़ नमाज़ के अलावा कोई नमाज़ नहीं है। (मुस्लिम, 710)

٥٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «اَلدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ ، وَجَنَّةُ الكَافِرِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ، ٢٩٥٦]

50. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दुनिया मोमिन के लिये कैद खाना है और काफिर के लिये जन्नत है। (मुस्लिम, 2956)

٥١- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ أَحْدَثَ فِي أَمْرِنَا هَذَا مَا لَيْسَ مِنْهُ فَهُوَ رَدٌّ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٢٦٩٧، ١٧١٨]

51. आइशा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं कि आप ने फरमायाः जिसने हमारे दीन में नई बात ईजाद की जो इसमें से न हो तो वह मरदूद है। (बुखारी, 2697 मुस्लिम, 1718)

٥٢- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «أَحَبُّ الأَعْمَالِ إِلَى اللهِ تَعَالَى أَدْوَمُهَا وَإِنْ قَلَّ» . [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٧٨٣، ٦٤٦٤].

52. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आप ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक सबसे ज़्यादा महबूब आमाल वह हैं जिनको बराबर किया जाये अगर्चे कम ही क्युं हों। (बुखारी 783 – मुस्लिम 6464)

٥٣- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيْعَ اللهَ فَلْيُطِعْهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلَا يَعْصِهِ». [رَوَاهُ الْبُـخَارِيُّ، ٦٦٩٦]

53. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः जिस शख़्स ने अल्लाह की फरमाबरदारी के लिये नज़र मानी तो चाहिये कि वह उस की फरमाबरदारी करे और जिसने अल्लाह की नाफरमानी की नज़र मानी तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे। (बुखारी, 6696)

٥٤- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «لَا تَسُبُّوا الأَمْوَاتَ؛ فَإِنَّهُمْ قَدْ أَفْضَوْا إِلَى مَا قَدَّمُوا». [رَوَاهُ الْبُـخَارِيّ ُ، ١٣٩٣]

54. आइशा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः मुर्दों को बुरा भला न कहो क्योंकि मुर्दों ने जो कुछ किया था उसका बदला उन्हें मिल चुका। (बुखारी, 1393)

٥٥- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ ﷺ لَا يَدَعُ أَرْبَعًا قَبْلَ الظُّهْرِ، وَرَكْعَتَيْنِ قَبْلَ الغَدَاةِ» [رَوَاهُ الْبُـخَارِيُّ، ١١٨٢]

55. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़ुहर की नमाज़ से पहले चार रकअत नहीं छोड़ते थे और दो रकअत फज्र से पहले। (बुखारी, 1182)

٥٦- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحِبُّ التَّيَمُّنَ مَا اسْتَطَاعَ فِي شَأْنِهِ كُلِّهِ، فِي طُهُورِهِ وَتَرَجُّلِهِ وتَنَعُّلِهِ». [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ، ٤٢٦]

56. आइशा रज़िअल्लाहो तआला अन्हा नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तमाम कामों में दायें तरफ को पसन्द करते थे पाकी हासिल करने में कंघी करने में और जूता पहनने में (बुखारी, 426)

٥٧- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَت: «كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَذْكُرُ اللهَ عَلَى كُلِّ أَحْيَانِهِ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٣٧٣]

57. आइशा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह को हर वक़्त याद करते थे। (मुस्लिम, 373)

٥٨- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «رَكْعَتَا الفَجْرِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيْهَا» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٧٢٥]

58. आइशा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु वसल्लम से बयान करती हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फज्र की दो रकअ्तें दुनिया और उसकी तमाम चीज़ों से बेहतर हैं। (मुस्लिम, 725)

٥٩- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «إِنَّ الرِّفْقَ لَا يَكُوْنُ فِي شَيءٍ إِلَّا زَانَهُ، وَلَا يُنْزَعُ مِنْ شَيءٍ إِلَّا شَانَهُ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ، ٢٥٩٤]

59. आइशा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करती हैं आपने फरमायाः बेशक जिस चीज़ में नर्मी पायी जाये तो वह उस को अच्छा बना देती है और जिस चीज़ से नर्मी निकल जाये तो वह चीज़ ऐबदार हो जाती है। (मुस्लिम, 2594)

٦٠- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُم حَتّٰى يُحِبَّ لِأَخِيْهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ١٣، ٤٥]

60. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तुम में से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि वह अपने भाई के लिये वही पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (बुखारी 13 – मुस्लिम 45)

٦١- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَا مِنْ مُسْلِمٍ يَغْرِسُ غَرْسَاً، أَو يَزْرَعُ زَرْعًا، فَيَأْكُلُ مِنْهُ طَيْرٌ، أَو إِنْسَانٌ، أَو بَهِيْمَةٌ، إِلَّا كَانَ لَهُ بِهِ صَدَقَةٌ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٢٣٢٠، ١٥٥٣]

61. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः कोई

मुसलमान पौदा लगाता है या खेती करता है और उससे पंक्षी और इन्सान और जानवर खाते हैं तो यह उसके लिये सदक़ा है। (बुखारी, 2320 मुस्लिम 1553)

٦٢- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ أَحَبَّ أَنْ يُبْسَطَ لَهُ فِي رِزْقِهِ، وَ يُنْسأُ لَهُ فِي أَثَرِهِ، فَلْيَصِلْ رَحِمَهُ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٥٩٨٦، ٢٥٥٧]

62. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः जो षख्स यह चाहता हो कि उसकी रोज़ी में बढ़ोतरी कर दी जाये और उसकी उमर में इजाफा हो तो उसे चाहिये कि अपने रिश्ते नाते को जोड़े रखे। (बुखारी 5986 – मुस्लिम 2557)

٦٣- عَنْ أَنَسٍ ﷺ قَالَ: كَانَ أكثرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: «اَللَّهُمَّ رَبَّنا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً، وَ فِي الآخِرَةِ حَسَنَةً، وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٦٣٨٩، ٢٦٩٠]

63. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते थेः अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतौं व फिल आखिरति हसनतौं व क़िना अजाबन्नार, ऐ अल्लाह हम को दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे और जहन्नम की आग से बचा ले। (बुखारी, 6389 मुस्लिम, 2690)

٦٤- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «إِنَّمَا الصَّبْرُ عِنْدَ الصَّدْمَةِ الأُوْلٰى»

[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ١٢٨٣، ٩٢٦]

64. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक सब्र पहले दुख के वक्त है। (बुखारी,1283 मुस्लिम 926)

٦٥- عن أنسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أنه قال: «يَتْبَعُ المَيِّتَ ثَلَاثَةٌ فَيَرْجِعُ اثْنَانِ وَيَبْقَى مَعَهُ وَاحِدٌ، يَتْبَعُهُ أَهْلُهُ، وَمَالُهُ، وَعَمَلُهُ، فَيَرْجِعُ أَهْلُهُ وَمَالُهُ، وَيَبْقٰى عَمَلُهُ».

[مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦٥١٤، ٢٩٦٠]

65. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः तीन चीज़ें मय्यत के साथ जाती हैं और दो चीज़ें लौट आती हैं और एक चीज़ बाकी रह जाती है उसके परिवार वाले उसका माल और उसका अमल उसके साथ जाता है लेकिन उसके परिवार उसका माल लौट आता है और उसका अमल बाकी रह जाता है। (बुखारी 6514 – मुस्लिम, 2960)

٦٦- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «يَسِّرُوا وَلَا تُعَسِّرُوا، وَ بَشِّرُوا وَلَا تُنَفِّرُوا». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ، ٦٩، ١٧٣٣]

66. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः आसानी पैदा करो और मुश्किल न पैदा करो, खुशखबरी सुनाओ और घृणा की बातें न करो। (बुखारी, 69 मुस्लिम, 1733)

٦٧- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «سَوُّوا صُفُوْفَكُم ؛ فإِنَّ تَسْوِيَةَ الصُّفُوفِ مِنْ إِقَامَةِ الصَّلَاةِ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٧٢٣، ٤٣٣]

67. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः अपनी सफों को बराबर करो, बेशक सफों को बराबर करना नमाज़ की दुरूस्तगी में से है। (बुखारी,723 मुस्लिम, 433)

٦٨- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:«إِنَّ اللهَ لَيَرضَى عَنِ الْعَبْدِ أَنْ يَأْكُلَ الأَكْلَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا،أَوْ يَشْرَبَ الشَّرْبَةَ فَيَحْمَدَهُ عَلَيْهَا»[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٧٣٤]

68. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः बेशक अल्लाह बन्दे से खुश हो जाता है क्योंकि जब वह खाता है तो उस पर अल्लाह की हम्द बयान करता है और पानी पीता है तो उस पर भी अल्लाह की हम्द बयान करता है। (मुस्लिम, 2734)

٦٩- عَنْ أَنَسٍ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُم حَتَّى أَكُوْنَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهِ، وَوَلَدِهِ، وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ١٥، ٤٤]

69. अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आपने फरमायाः तुम में से कोई उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके बाप से उसकी औलाद से और तमाम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं। (बुखारी,15 मुस्लिम, 44)

٧٠- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : «مَا زَالَ جِبْرِيْلُ يُوْصِيْنِي بِالْجَارِ حَتَّى ظَنَنْتُ أَنَّهُ سَيُوَرِّثُهُ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٦٠١٥، ٢٦٢٥]

70. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुझे जिब्रईल पड़ोसी के बारे में बराबर वसीयत करते रहे यहां तक कि मुझे यह यकीन होने लगा कि वह उसको वारिस बना देंगे। (बुखारी 6015 – मुस्लिम 2625)

٧١- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : «اِجْعَلُوْا آخِرَ صَلَاتِكُم بِاللَّيْلِ وِتْرًا». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٩٩٨، ٧٥١]

71. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रात में अपनी नमाज़ के आखिर में वित्र पढ़ो। (बुखारी 998 – मुस्लिम 751)

٧٢- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ : «مَا زَالَ الرَّجُلُ يَسْأَلُ النَّاسَ حَتَّى يَأْتِيَ يَوْمَ القِيَامَةِ لَيْسَ فِي وَجْهِهِ مُزْعَةُ لَحْمٍ» [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ١٤٧٤، ١٠٤٠]

72. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों से भीक मांगने वाला आदमी क्यामत के दिन इस हाल में आयेगा कि उसके चेहरे पर गोश्त नहीं होगा। (बुखारी,1474 मुस्लिम, 1040)

٧٣- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ الله ﷺ: «الَّذِي تَفُوْتُهُ صَلَاةُ العَصْرِ، فَكَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلُهُ وَمَالُهُ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٥٥٢، ٦٢٦]

73. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि उसका माल और औलाद सब बर्बाद होगए। (बुखारी, 552 मुस्लिम, 626)

٧٤- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «اَلْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ ، لا يَظلِمُهُ ولا يُسْلِمُهُ، مَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيْهِ ، كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ ، وَمَنْ فَرَّجَ

عَنْ مُسْلِمٍ كُرْبَةً فَرَّجَ اللهُ عَنْهُ كُرْبَةً مِنْ كُرُبَاتِ يَوْمِ القِيَامَةِ، وَمَنْ سَتَرَ مُسْلِمًا سَتَرَهُ اللهُ يَوْمَ القِيَامَةِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ، ٢٤٤٢، ٢٥٨٠]

74. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान मुसलमान का भाई है न वह जुल्म करता है और न उसको दुख पहुंचाता है, जो अपने भाई की जरूरत का ख्याल रखता है अल्लाह उसकी जरूरत पूरी करता है और जिसने किसी मुसलमान की किसी परेशानी को दूर कर दिया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसकी परेशानी को दूर कर देगा और जिसने किसी मुसलमान के ऐब को छुपाया अल्लाह तआला क्यामत के दिन उसके ऐब को छुपायेगा। (बुखारी,2442 मुस्लिम 2580)

٧٥- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ أَخَذَ رَسُوْلُ الله ﷺ بِمَنْكِبِيْ، فَقَالَ: «كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيْبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيْلٍ». [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٦٤١٦]

75. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और कहा तुम इस दुनिया में मुसाफिर या रास्ता पार करने वाले की तरह रहो। (बुखारी, 6416)

٧٦- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ الله ﷺ : «اَلظُّلْمُ ظُلُمَاتٌ يَوْمَ القِيَّامَةِ». [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٢٤٤٧]

76. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुल्म क्यामत के दिन अंधेरे का सबब बनेगा। (बुखारी, 2447)

٧٧- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : «اَلْمُسْلِمُ مَنْ سَلِمَ الْمُسْلِمُوْنَ مِن لِّسَانِهِ وَيَدِهِ، وَالْمُهَاجِرُ مَنْ هَجَرَ مَا نَهٰى اللهُ عَنْهُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٦٤٨٤]

77. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़ुबान से दूसरे मुसलमान महफूज़ रहें और मुहाजिर वह है जो अल्लाह की मना की हुयी चीजों को छोड़ दे। (बुखारी, 6484)

٧٨- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ : «كُلُّ مُسْكِرٍ خَمْرٌ، وَكُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٠٠٣]

78. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर नशाआवर चीज़ शराब है और हर नशाआवर चीज़ हराम है। (मुस्लिम, 2003)

٧٩- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ : «أَبَرُّ الْبِرِّ أَنْ يَصِلَ الرَّجُلُ وُدَّ أَبِيْهِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٥٥٢]

79. इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया नेकियों में सबसे बड़ी नेकी यह है कि कोई आदमी अपने बाप से मुहब्बत रखने वालों से मुहब्बत रखे। (मुस्लिम, 2552)

٨٠- عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ الله ﷺ قَالَ: «لَا حَسَدَ إِلَّا فِي اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ القُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ ، وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالًا فَهُوَ يُنْفِقُهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٧٥٢٩، ٨١٥]

80. सालिम अपने बाप रजिअल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हसद केवल दो चीज़ों में है एक आदमी वह है जिसको अल्लाह ने कुरआन की तालीम दी तो वह उसकी रात और दिन में तिलावत करता है और एक आदमी वह है जिस को अल्लाह ने माल दिया तो वह उस माल को रात और दिन में खर्च करता है। (बुखारी,7529 मुस्लिम, 815)

٨١- عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ الله ﷺ قَالَ : «لَا تَأْكُلُوْا بِالشِّمَالِ ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ يَأْكُلُ بِالشِّمَالِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٠١٩]

81. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बायें से न खाओ क्योंकि बायें से शैतान खाता है। (मुस्लिम, 2019)

٨٢- عَنْ جَابِرٍ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : «مَنْ لَقِيَ اللهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ ، وَمَنْ لَقِيَهُ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٩٣]

82. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं बनाया होगा तो वह जन्नत में दाखिल होगा और जो अल्लाह से मुलाकात करेगा और उसने उसके साथ किसी को साझीदार बनाया होगा तो जहन्नम में दाखिल होगा। (मुस्लिम, 93)

٨٣- عَنْ جَابِرٍ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٨٢]

83. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः बेशक आदमी शिर्क और कुफ़्र के बीच का फर्क़ नमाज़ का छोड़ना है। (मुस्लिम 82)

٨٤- عَنْ جَابِرٍ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : «يُبْعَثُ كُلُّ عَبْدٍ عَلَى مَا مَاتَ عَلَيْهِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٨٧٨]

84. जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने

फरमायाः हर बन्दा अपने कर्म के अनुसार उठाया जायेगा। (मुस्लिम, 2878)

٨٥- عَنْ بَعْضِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُنَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «مَنْ أَتَى عَرَّافًا فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ لَمْ تُقْبَلْ لَهُ صَلَاةٌ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٢٣٠]

85. नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बाज़ बीवियां बयान करती हैं आपने फरमायाः जो किसी अर्राफ (भविष्य या गैब की बातें बताने वाले) के पास गया और उसने किसी चीज़ के बारे में पूछा तो उसकी चालीस रातों की नमाज़ कुबूल नहीं होगी। (मुस्लिम, 2230)

٨٦- عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : «إِنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَذَابًا عِنْدَ اللهِ يَوْمَ القِيَامَةِ الْمُصَوِّرُوْنَ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٥٩٥٠، ٢١٠٩]

86. इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः क्यामत के दिन अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा सख्त अज़ाब तसवीर बनाने वाले को दिया जायेगा। (बुखारी,5950 मुस्लिम, 2109)

٨٧- عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رضي الله عنه عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : «مَنْ قَرَأَ بِالآيَتَيْنِ مِنْ آخِرِ سُوْرَةِ البَقَرَةِ فِي لَيْلَةٍ كَفَتَاهُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٥٠٠٩]

87. इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं आप ने फरमायाः जिस ने रात में सूरह बक़रा की आखिरी दो आयतें पढ़ीं यह उसके लिये काफी हो जायेंगी। (बुखारी 5009)

٨٨- عَنْ ثَابِتِ بنِ الضحَّاكِ ﷺ عَنْ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ قَالَ : «لَعْنُ الْمُؤمِنِ كَقَتْلِهِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٦١٠٥، ١١٠]

88. साबित बिन जह्हाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बयान करते हैं कि आप ने फरमायाः मोमिन पर लानत करना उसको कत्ल करने के समान है। (बुखारी,6105 मुस्लिम, 110)

٨٩- عَنْ أَبِي ذَرٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : «لَا تَحْقِرَنَّ مِنَ الْمَعْرُوْفِ شَيْئًا ، وَلَوْ أَنْ تَلْقٰى أَخَاكَ بِوَجْهٍ طَلِقٍ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٦٢٦]

89. अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः छोटी सी भलाई को हक़ीर (मामूली) न समझो और अगर अपने भाई से मिलो तो उससे हंसते हुये मिलो। (मुस्लिम, 2626)

٩٠- عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ: «مَا مِنْ عَبْدٍ مُسْلِمٍ يَدْعُو لِأَخِيْهِ بِظَهْرِ الغَيْبِ، إِلَّا قَالَ المَلَكُ: وَلَكَ بِمِثْلٍ» [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٧٣٢]

90. अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भी मुस्लिम बन्दा अपने किसी भाई की उसकी गैरमौजूदगी में उसके लिये दुआ करता है तो फरिश्ता कहता है तुम्हारे लिये ऐसी ही दुआ हो। (मुस्लिम, 2732)

٩١- عَنْ مُعَاوِيَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : «مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّيْنِ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٧١، ١٠٣٧]

91. मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसके साथ अल्लाह भलाई करने का इरादा करता है तो उसको दीन की समझ दे देता है। (बुखारी,71 मुस्लिम, 1037)

٩٢- عَنْ أَبِي سَعِيْدٍ الْخُدْرِي ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : «إِذَا سَمِعْتُمُ النِّدَاءَ فَقُولُوا مِثْلَ مَا يَقُولُ الْمُؤَذِّنُ » [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٦١١، ٣٨٣]

92. अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम मुअज़्ज़िन की आवाज़ सुनो तो वैसे ही कहो जिस तरह मुअज़्ज़िन कहता है। (बुखारी,611 मुस्लिम, 383)

٩٣- عَنْ أَبِي قَتَادَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : «إِذَا دَخَلَ أَحَدُكُمُ الْمَسْجِدَ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجلِسَ». [مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٤٤٤، ٧١٤]

93. अबू कतादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई मस्जिद में दाखिल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी,444 मुस्लिम, 714)

٩٤- عَنْ أَبِي مُوْسَى ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ الله ﷺ: «مَثَلُ الَّذِي يَذْكُرُ رَبَّهُ وَالَّذِي لَا يَذْكُرُ رَبَّهُ مَثَلُ الْحَيِّ وَالْمَيِّتِ». [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٦٤٠٧]

94. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अपने रब का जिक्र करता है और जो जिक्र नहीं करता है उनकी मिसाल जिन्दे और मुर्दे की तरह है। (बुखारी, 6407)

٩٥- عن ابن عباس رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ الله ﷺ : «نِعْمَتَانِ مَغْبُونٌ فِيْهِمَا كَثِيرٌ مِنَ النَّاسِ : الصِّحَّةُ وَالفَرَاغُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٦٤١٢]

95. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो नेअमतों में अधिकतर लोग धोके में रहते हैं तनदुरूस्ती और खाली वक्त में (बुखारी 6412)

٩٦- عَنْ عُثْمَانَ بنِ عَفَّانٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «خَيْرُكُم مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ» [رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ ٥٠٢٧]

96. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में सब से बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और उसको सिखाये। (बुखारी, 5027)

٩٧- عَنْ عُثْمَانَ بنِ عَفَّانٍ ﷺ قَالَ:قَالَ النَّبِيُّ ﷺ:«مَنْ تَوَضَّأَ فَأَحْسَنَ الوُضُوْءَ خَرَجَتْ خَطَايَاهُ مِنْ جَسَدِهِ،حَتّٰى تَخْرُجَ مِنْ تَحْتِ أَظْفَارِهِ»[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٢٤٥]

97. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अच्छी तरह वुज़ू किया तो उसके शरीर से गुनाह निकल जाते हैं यहां तक कि उसके नाखुन से भी निकल जाते हैं। (मुस्लिम, 245)

٩٨- عَنْ عُثْمَانَ بنِ عَفَّانٍ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ الله ﷺ : «مَنْ صَلَّى العِشَاءَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ نِصْفَ اللَّيْلِ ، وَمَنْ صَلَّى الصُبْحَ فِي جَمَاعَةٍ فَكَأَنَّمَا قَامَ اللَّيْلَ كُلَّهُ».

[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ٦٥٦]

98. उस्मान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इशा की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी तो गोया कि उसने आधी रात तक नमाज़ पढ़ी और जिसने सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़ी तो गोया कि उसने पूरी रात नमाज़ पढ़ी। (मुस्लिम, 656)

٩٩- عَنْ أَبِي أَيُّوبَ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ : «مَنْ صَامَ رَمَضَانَ ثُمَّ أَتْبَعَهُ سِتًّا مِّنْ شَوَّالٍ ، كَانَ كَصِيَامِ الدَّهْرِ». [رَوَاهُ مُسْلِمٌ ١١٦٤]

99. अबू अय्यूब अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने रमज़ान के रोज़े रखे और फिर शव्वाल के छः रोज़े रखे तो उसका रोज़ा पूरे जमाने के रोज़े की तरह हो गया। (मुस्लिम 1164)

١٠٠- عَنْ سَهْلِ بنِ حُنَيْفٍ ﷺ قَالَ:قَالَ رَسُوْلِ اللهِ ﷺ «مَنْ سَأَلَ اللهَ الشَّهَادَةَ بِصِدْقٍ،بَلَّغَهُ اللهُ مَنَازِلَ الشُّهَدَاءِ،وَإِنْ مَاتَ عَلَى فِرَاشِهِ»[رَوَاهُ مُسْلِمٌ ١٩٠٩]

100. सहल बिन हुनैफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह से सच्चे दिल से षहादत तलब की अल्लाह उसको शहीदों के दर्जे तक पहुंचा देगा अगर्चे उस की मौत बिस्तर पर हो। (मुस्लिम, 1909)

١٠١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا أَحْسَنَ أَحَدُكُمْ إِسْلَامَهُ ، فَكُلُّ حَسَنَةٍ يَعْمَلُهَا تُكْتَبُ لَهُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِ مِئَةِ ضِعْفٍ ، وَكُلُّ سَيِّئَةٍ يَعْمَلُهَا تُكْتَبُ لَهُ بِمِثْلِهَا» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٤٢، ١٢٩ ﴾

101. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः जब तुम में से कोई अपने इस्लाम को बेहतर बना ले तो हर नेकी जो वह करता है उसके बदले में उसके लिये दस से सात सौ गुना तक लिख दिया जाता है और हर बुराई जिसको वह करता है तो सिर्फ उसी के बराबर लिखा जाता है। (बुखारी42, मुस्लिम, 129)

١٠٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَأْتِي الشَّيْطَانُ أَحَدَكُمْ فَيَقُولُ: مَنْ خَلَقَ كَذَا ؟ مَنْ خَلَقَ كَذَا؟ حَتَّى يَقُوْلَ: مَنْ خَلَقَ رَبَّكَ؟ فَإِذَا بَلَغَهُ ، فَلْيَسْتَعِذْ بِاللَّهِ وَلْيَنْتَهِ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٢٧٦، ١٣٤ ﴾

102. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से किसी के पास शैतान आता है फिर कहता है कि फुलां चीज़ को किस ने पैदा किया? फुलां चीज़ को किसने पैदा किया यहां तक कि शैतान कहता है कि तुम्हारे रब को किसने पैदा किया? जब वह किसी को इस तरह के वसवसा में डाले तो उसे अल्लाह से पनाह मांगनी चाहिये और शैतानी ख्याल को छोड़ देना चाहिय। (बुखारी:3276, मुस्लिमः134)

١٠٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا أَحَبَّ اللَّهُ الْعَبْدَ ، نَادَى جِبْرِيلَ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحْبِبْهُ ، فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ ، فَيُنَادِي جِبْرِيلُ فِي أَهْلِ

السَّمَاءِ: إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ فُلَانًا فَأَحِبُّوهُ ، فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ ، ثُمَّ يُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي الْأَرْضِ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٢٠٩، ٢٦٣٧ ﴾

103. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्रईल से कहता है बेशक मैं फुलां से मुहब्बत करता है इसलिये तुम भी उससे मुहब्बत करो फिर जिब्रईल भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं। फिर जिब्रईल आसमान वालों को पुकारने लगते हैं कि अल्लाह तआला फुलां शख्स से मुहब्बत करता है इसलिये तुम सब लोग उससे मुहब्बत करो, पुकार लगाने के बाद पूरे आसमान वाले उससे मुहब्बत करने लगते हैं इसके बाद पूरी धरती वाले उसको मक़बूल समझते हैं। (बुखारीः 3209, मुस्लिमः 2637)

١٠٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَقْبَلُ اللَّهُ صَلَاةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٩٥٤، ٢٢٥ ﴾

104. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला तुम में से किसी ऐसे शख्स की नमाज़ कुबूल नहीं करता जिसे वुज़ू की ज़रूरत हो यहां तक कि वह वुज़ू कर ले। (बुखारी, 6954, मुस्लिम 225)

١٠٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «أَرَأَيْتُمْ لَوْ أَنَّ نَهَرًا بِبَابِ أَحَدِكُمْ يَغْتَسِلُ مِنْهُ كُلَّ يَوْمٍ خَمْسَ مَرَّاتٍ ، هَلْ يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيْءٌ ؟» قَالُوا: لَا يَبْقَى مِنْ دَرَنِهِ شَيءٌ، قَالَ: «فَذَلِكَ مَثَلُ الصَّلَوَاتِ الخَمْسِ ، يَمْحُو اللهُ بِهِنَّ الْخَطَايَا» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٢٨ ، ٦٦٧ ، واللّفظُ لِمُسْلِمٍ ﴾

105. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः भला बताओ अगर तुम में से किसी के दरवाज़े पर एक नहर हो और वह उसमें रोज़ाना पांच बार नहाता हो तो क्या उसके शरीर पर मैल बाक़ी रहेगा? लोगों ने कहाः उसके शरीर पर कुछ सी भी मैल बाकी नहीं रहेगी। तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यही मिसाल पांचों नमाज़ों की है। अल्लाह तआला इन नमाज़ों के बदले गुनाहों को मिटा देता है। (बुखारी 528, मुस्लिम 667, शब्द मुस्लिम के हैं)

١٠٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَيْسَ الْغِنَى عَنْ كَثْرَةِ الْعَرَضِ، وَلَكِنَّ الْغِنَى غِنَى النَّفْسِ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٤٤٦، ١٠٥١ ﴾

106. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः माल व इज्ज़त मालदारी नहीं है असल माल दारी नफ्स की मालदारी है। (बुखारी, 6446 मुस्लिम, 1051)

١٠٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ سُئِلَ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ ؟ فَقَالَ: «إِيمَانٌ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ» قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا ؟ قَالَ: «اَلْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ» قِيلَ: ثُمَّ مَاذَا ؟ قَالَ: «حَجٌّ مَبْرُورٌ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٦، ٨٣﴾

107. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया गयाः कौन सा अमल सबसे अफज़ल है? तो आप ने फरमायाः अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान। पूछा गयाः फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद। पूछा गया फिर कौन सा अमल अफज़ल है? आपने फरमायाः हज्जे मबरूर (बुखारी, 26, मुस्लिम, 83)

١٠٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِالله وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلَا يُؤْذِ جَارَهُ ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِالله وَاليَوْمِ الآخِرِ فَلْيُكْرِم ضَيْفَهُ ، وَمَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِالله وَالْيَوْمِ الآخِرِ فَلْيَقُلْ خَيْرًا أَو لِيَصْمُتْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦١٣٦، ٤٧﴾

108. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो वह अपने पड़ोसी को दुख न दे और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे

अपने मेहमान का सम्मान करना चाहिये और जो अल्लाह और आखिरत के दिन पर ईमान रखता है तो उसे अच्छी बात कहनी चाहिये या खामोश रहना चाहिये। (बुखारी 6136, मुस्लिम, 47)

١٠٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَنْزِلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الْآخِرِ، يَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ، مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ، مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١١٤٥، ٧٥٨﴾

109. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हमारा रब आसमाने दुनिया पर हर रात को उस वक़्त उतरता है जब रात की आखिरी तिहाई बाकी रहती है कहता है जो मुझे पुकारेगा तो उसकी दुआ कुबूल करूंगा जो मुझसे मांगेगा तो मैं उसको दूंगा जो मुझसे मआफी तलब करेगा तो मैं उसको मआफ कर दूंगा। (बुखारी, 1145, मुस्लिम, 758)

١١٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «قَالَ اللهُ تَعَالَى: يُؤْذِينِي ابنُ آدَمَ، يَسُبُّ الدَّهْرَ، وَأَنَا الدَّهْرُ، بِيَدِي الْأَمْرُ، أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٤٩١، ٢٢٤٦﴾

110. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः अल्लाह तआला ने कहाः आदम की औलाद मुझे दुख पहुंचाती है वह जमाने को गाली देती है और जमाना मैं ही हूं मामले मेरे हाथ में हैं मैं ही रात और दिन को बदलता हूं। (बुखारी, 7491, मुस्लिम, 2246)

١١١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّ اللَّهَ تَجَاوَزَ عَنْ أُمَّتِي مَا حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسَهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ أَوْ تَتَكَلَّمْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٢٦٩، ١٢٧﴾

111. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला मेरी उम्मत की तरफ से होने वाले उन गलत इरादों को मआफ कर देता है जब तक कि उसको कर न दे या उसको कह न दे। (बुखरी 5269 मुस्लिम, 127)

١١٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ فَتَعَجَّلَ كُلُّ نَبِيٍّ دَعْوَتَهُ وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَهِيَ نَائِلَةٌ إِنْ شَاءَ اللهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٣٠٤، ١٩٩﴾

112. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर नबी के लिये कुबूल होने वाली एक दुआ होती है जिसके जरिये वह दुआ करता है और मैं चाहता हूं कि इस दुआ को आखिरत में अपनी उम्मत की

शिफाअत के लिये खास कर दूं इन्शा अल्लाह मेरी यह दुआ मेरे हर उस उम्मती के हक मे होगी जिसकी मौत इस हालत में हुई हो कि वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक न किया हो। (बुखारी – 6304 मुस्लिम, 199)

١١٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «أَقِيمُوا الصَّفَّ فِي الصَّلَاةِ، فَإِنَّ إِقَامَةَ الصَّفِّ مِنْ حُسْنِ الصَّلَاةِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٢٢، ٤٣٥﴾

113. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नमाज़ में सफों को बराबर रखो क्यों कि नमाज़ का हुस्न सफों को बराबर रखने में है। (बुखारी, 722 मुस्लिम, 435)

١١٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «فِي يَوْمِ الْجُمُعَةِ سَاعَةٌ لَا يُوَافِقُهَا مُسْلِمٌ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي، يَسْأَلُ اللَّهَ خَيْراً إِلَّا أَعْطَاهُ». وَقَالَ بِيَدِهِ، قُلْنَا يُقَلِّلُهَا يُزَهِّدُها. ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٤٠٠، ٨٥٢﴾

114. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जुमा के दिन एक ऐसी घड़ी होती है जिसमें कोई मुसलमान खड़े हो कर दुआ करता है तो वह घड़ी उसके लिये अच्छी होती है। अल्लाह से भलाई मांगता है तो अल्लाह तआला उसको दे देता है। और अपने हाथ के

इषारे से कहा। हमने कहा कि इस घड़ी को आप बहुत कम या मामूली बता रहे थे। (बुखारी, 6400 मुस्लिम, 852)

١١٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا سَمِعْتُمْ صِيَاحَ الدِّيَكَةِ فَاسْأَلُوا اللَّهَ مِنْ فَضْلِهِ ؛ فَإِنَّهَا رَأَتْ مَلَكًا ، وَإِذَا سَمِعْتُمْ نَهِيقَ الْحِمَارِ ، فَتَعَوَّذُوا بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ ؛ فَإِنَّهُ رَأَى شَيْطَانًا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٣٠٣، ٢٧٢٩﴾

115. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब मुर्ग की बांग (आवाज़) सुनो तो अल्लाह से उसके फज्ल का सवाल करो क्योंकि उसने फरिश्ते को देखा है और जब तुम गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो क्योंकि उसने शैतान को देखा है। (बुखारी, 3303, मुस्लिम, 2729)

١١٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: أَوْصَانِي خَلِيلِي ﷺ بِثَلَاثٍ: صِيَامِ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ مِنْ كُلِّ شَهْرٍ ، وَرَكْعَتَيْ الضُّحَى ، وَأَنْ أُوتِرَ قَبْلَ أَنْ أَنَامَ . ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٩٨١، ٧٢١﴾

116. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मेरे खलील सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे तीन चीजों वसिय्यत की थी, हर महीने में तीन दिन रोज़ा रखने की वसिय्यत की थी, और चाश्त की दो रकअत पढ़ने की

वसिय्यत की थी और सोने से पहले वित्र पढ़ लेने की भी वसिय्यत की थी। (बुखारी, 1981 मुस्लिम, 721)

١١٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الصَّدَقَةِ أَعْظَمُ أَجْرًا ؟ قَالَ: «أَنْ تَصَدَّقَ وَأَنْتَ صَحِيحٌ شَحِيحٌ تَخْشَى الْفَقْرَ وَتَأْمُلُ الْغِنٰى، وَلَا تُمْهِلُ حَتَّى إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ قُلْتَ: لِفُلَانٍ كَذَا ، وَلِفُلَانٍ كَذَا ، وَقَدْ كَانَ لِفُلَانٍ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٤١٩، ١٠٣٢﴾

117. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आया और कहाः ऐ अल्लाह के रसूल किस तरह के सदके में ज़्यादा सवाब है? आपने फरमायाः जिसे तुम सेहत के साथ कन्जुसी के बावजूद करो तुम्हें एक तरफ फकीरी का डर हो और दूसरी तरफ मालदार बनने की तमन्ना और उस सदका खैरात में ढील नहीं होनी चाहिये यहां तक कि जब जान हलक तक आ जाये तो उस वक़्त तुम कहने लगो कि फुलां के लिये इतना और फुलां के लिए इतना हालांकि अब तो वह दोसरे का हो चुका है। (बुखारी 1419, मुस्लिम, 1032)

١١٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «أَسْرِعُوا بِالْجَنَازَةِ، فَإِنْ تَكُ صَالِحَةً فَخَيْرٌ تُقَدِّمُونَهَا إِلَيْهِ، وَإِنْ تَكُ سِوَى ذَلِكَ فَشَرٌّ تَضَعُونَهُ عَنْ رِقَابِكُمْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٣١٥، ٩٤٤﴾

118. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम जनाज़ा को तेज़ी से लेकर चलो क्योंकि अगर वह नेक है तो तुम उसको भलाई की तरफ नजदीक कर रहे हो और अगर इसके सिवा है, तो एक बुराई है जिसे तुम अपनी गर्दनों से उतार रहे हो। (बुखारी 1315, मुस्लिम, 944)

١١٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «حَقٌّ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ أَنْ يَغْتَسِلَ فِي كُلِّ سَبْعَةِ أَيَّامٍ يَوْمًا يَغْسِلُ فِيهِ رَأْسَهُ وَجَسَدَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٨٩٧، ٨٤٩﴾

119. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर मुसलमान पर हक़ है कि हर सात दिन में एक दिन नहाये, उस दिन अपने सर को और जिस्म को अच्छी तरह धोये । (बुखारी, 897 मुस्लिम, 849)

١٢٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «اَلحَلِفُ مُنَفِّقَةٌ لِلسِّلْعَةِ مُمْحِقَةٌ لِلْبَرَكَةِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٠٨٧، ١٦٠٦﴾

120. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः झुठी कसम खाने से सामान बिक जाती है लेकिन बरकत को मिटा देती है। (बुखारी, 2087, मुस्लिम, 1606)

١٢١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «كُلُّ أُمَّتِي مُعَافًى إِلَّا الْمُجَاهِرِينَ ، وَإِنَّ مِنَ الْمُجَاهَرَةِ أَنْ يَعْمَلَ الرَّجُلُ بِاللَّيْلِ عَمَلًا، ثُمَّ يُصْبِحُ وَقَدْ سَتَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ ، فَيَقُولُ: يَا فُلَانُ عَمِلْتُ الْبَارِحَةَ كَذَا وَكَذَا ، وَقَدْ بَاتَ يَسْتُرُهُ رَبُّهُ ، وَيُصْبِحُ يَكْشِفُ سِتْرَ اللَّهِ عَنْهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٠٦٩، ٢٩٩٠﴾

121. अबू हरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरी तमाम उम्मत को मआफ कर दिया जायेगा लेकिन खुल्लम खुल्ला गुनाह करने वालों को मआफ नहीं किया जायेगा और खुल्लम खुल्ला गुनाह करने में यह भी शामिल है कि एक शख्स रात को कोई (गुनाह) का काम करे और अल्लाह ने उसके गुनाह को छुपा लिया है मगर सुबह होने पर वह कहने लगे कि ऐ फुलां मैंने कल रात फुलां फुलां काम किया था, रात गुज़र गयी थी, उसके रब ने उसके गुनाह को छुपाये रखा और जब सुबह हुयी तो

उसने खुद ही अल्लाह के पर्दे को खोल दिया। (बुखारी 6069, मुस्लिम, 299)

١٢٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا دَخَلَ رَمَضَانُ ، فُتِّحَتْ أَبْوَابُ الْجَنَّةِ وَغُلِّقَتْ أَبْوَابُ جَهَنَّمَ ، وَسُلْسِلَتِ الشَّيَاطِينُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٢٧٧، ١٠٧٩﴾

122. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब रमज़ान का महीना आता है तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शैतान जंजीरों में जकड़ दिये जाते हैं। (बुखारी, 3277 मुस्लिम, 1079)

١٢٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا نَسِيَ فَأَكَلَ وَشَرِبَ فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ ؛ فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللَّهُ وَسَقَاهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٩٣٣، ١١٥٥﴾

123. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई भूल कर खा पी ले तो उसे चाहिये कि अपना रोज़ा पूरा करे क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (बुखारी, 1933, मुस्लिम, 1155)

١٢٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ حَجَّ هَذَا الْبَيْتَ، فَلَمْ يَرْفُثْ، وَلَمْ يَفْسُقْ، رَجَعَ كَمَا وَلَدَتْهُ أُمُّهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٨١٩، ١٣٥٠﴾

124. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने इस घर (काबा) का हज्ज किया और उसमें न शहवत की बात की और न कोई गुनाह का काम किया तो वह उस दिन की तरह वापस होगा जिस दिन उस की मां ने उसे जना था। (बुखारी, 1819, मुस्लिम, 1350)

١٢٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «تُنْكَحُ الْمَرْأَةُ لِأَرْبَعٍ: لِمَالِهَا ، وَلِحَسَبِهَا وَجَمَالِهَا، وَلِدِينِهَا، فَاظْفَرْ بِذَاتِ الدِّينِ تَرِبَتْ يَدَاكَ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٠٩٠، ١٤٦٦﴾

125. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः चार चीजों की बुनियाद पर औरत से शादी की जाती है उसके माल की वजह से उसके हसब नसब की वजह से और उसके खुबसूरती की वजह से और उसके दीन की वजह से और तुम दीनदार औरत से शादी करके कामयाबी हासिल करो, नहीं तो तुम्हारे हाथों में मिटटी लगेगी। (बुखारी, 5090 मुस्लिम, 1466)

١٢٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١١٩٦، ١٣٩١ ﴾

126. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे घर और मेरे मिम्बर के बीच की जमीन जन्नत के बागों में से एक बाग है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ के ऊपर होगा। (बुखारी, 1196, मुस्लिम, 1391)

١٢٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يُسَلِّمُ الرَّاكِبُ عَلَى الْمَاشِي ، وَالْمَاشِي عَلَى الْقَاعِدِ ، وَالْقَلِيلُ عَلَى الْكَثِيرِ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ:٢١٦٠،٦٢٣٢ ﴾

وعندَ الْبُخَارِيِّ: «اَلصَّغِيرُ عَلَى الْكَبِيرِ» ﴿ ٦٢٣١ ﴾

127. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सवार पैदल चलने वाले से सलाम करेगा, पैदल चलने वाला बैठने वाले से और थोड़े लोग ज़्यादा लोगों पर सलाम करेंगे। (बुखारी, 2160 मुस्लिम, 6232)
और बुखारी में ''छोटा बड़े को सलाम करे '' का शब्द भी है। (बुखारी, 6231)

١٢٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٩٩٧، ٢٣١٨ ﴾

128. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो दया नहीं करता है उस पर दया नहीं की जाती है। (बुखारी, 5997 मुस्लिम, 2318)

١٢٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي بِطَرِيقٍ وَجَدَ غُصْنَ شَوْكٍ عَلَى الطَّرِيقِ فَأَخَّرهُ فَشَكَرَ اللَّهُ لَهُ فَغَفَرَ لَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٥٤، ١٩١٤﴾

129. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक आदमी चलते चलते राह में कांटे की कोई टेहनी पाया और उसको हटा दिया तो इस पर अल्लाह उसके इस अमल की कदर करते उसकी मग्फिरत कर दी । (बुखारी, 654 मुस्लिम, 1914)

١٣٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يُسْتَجَابُ لِأَحَدِكُمْ مَا لَمْ يَعْجَلْ يَقُولُ: دَعَوْتُ فَلَمْ يُسْتَجَبْ لِي» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٣٤٠، ٢٧٣٥﴾

130. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बन्दे की दुआ कुबूल होती है जब तक कि वह जल्दी न करे कि कहने लगे कि मैंने दुआ की थी और मेरी दुआ कुबूल नहीं हुयी। (बुखारी 634, मुस्लिम 2735)

١٣١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧١١٥، ١٥٧﴾

131. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत उस वक्त आयेगी जब एक आदमी दूसरे आदमी की कब्र से गुजरेगा तो वह कहेगा काष मैं उसकी जगह होता। (बुखारी, 7115 मुस्लिम, 157)

١٣٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَقُلْ أَحَدُكُمْ: اَللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ ، اِرْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ ، أُرْزُقْنِي إِنْ شِئْتَ ، وَلْيَعْزِمْ مَسْأَلَتَهُ ، إِنَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ، لَا مُكْرِهَ لَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٤٧٧، ٢٦٧٩﴾

132. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई इस तरह दुआ न करे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मेरी मगफिरत फरमा दे, अगर तू चाहे तो मुझ पर दया कर अगर तू चाहे तो मुझे रोज़ी दे बल्कि मजबूत इरादे से दुआ माँगनी चाहिये क्योंकि अल्लाह जो चाहता है करता है कोई उसको रोकने वाला नहीं (बुखारी, 7477 मुस्लिम, 2679)

١٣٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَتَمَنَّى أَحَدُكُمْ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ يَزْدَادُ وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ يَسْتَعْتِبُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٢٣٥، ٢٦٨٢﴾

133. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई शख्स मौत की तमन्ना न करे अगर वह नेक है तो संभव है कि और ज्यादा नेकी करे और अगर बुरा है तो शायद अपनी बुराईयों से तौबा करले। (बुखारी, 7235 मुस्लिम, 2682)

١٣٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا عَطَسَ أَحَدُكُمْ فَلْيَقُلْ: اَلْحَمْدُ لِلَّهِ ، وَلْيَقُلْ لَهُ أَخُوهُ أَوْ صَاحِبُهُ : يَرْحَمُكَ اللهُ، فَإِذَا قَالَ لَهُ: يَرْحَمُكَ اللهُ ، فَلْيَقُلْ: يَهْدِيكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٢٢٤، ٢٩٩٢﴾

134. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई छींके तो अल्हम्दुलिल्लाह कहे और उसका भाई या साथी यरहमुकल्लाह कहे जब उसका साथी यरहमुकल्लाह कह दे तो छींकने वाला उसके जवाब में यहदीकुमुल्लाहु व युसलिहु बालकुम कहे। (बुखारी, 6224 मुस्लिम, 2992)

١٣٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «سَتَكُونُ فِتَنٌ، اَلْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي، وَالمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي ، مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ ، فَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَعُذْ بِهِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٠٨١، ٢٨٨٦﴾

135. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: करीब ही ऐसे फितने पैदा होंगे जिनमें बैठने वाला खड़े होने वाले से बेहतर होगा और खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। जो दूर से उनकी तरफ झांक कर भी देखेगा तो वह उनको भी समेट लेंगे। उस वक्त जिस किसी को कोई पनाह मिल जाये या बचाव की जगह मिल जाये तो वह उसमें पनाह ले ले। (बुखारी, 7081 मुस्लिम, 2886)

١٣٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تُقَاتِلُوا الْيَهُودَ ، حَتَّى يَقُولَ الحَجَرُ وَرَاءَهُ الْيَهُودِيُّ: يَا مُسْلِمُ ، هَذَا يَهُودِيٌّ وَرَائِي فَاقْتُلْهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٩٢٦، ٢٩٢٢﴾ وَزَادَ مُسْلِمٌ: «إِلَّا الْغَرْقَدَ فَإِنَّهُ مِنْ شَجَرِ الْيَهُودِ»

136. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः क्यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक कि यहूदियों से तुम्हारी जंग न हो जाये और पत्थर भी अपने पीछे छिपे हुये यहूदी के बारे में कहेगा ऐ मुसलमान मेरे पीछे छिपे इस यहूदी को कत्ल कर दो। (बुखारी, 2926 मुस्लिम, 2922)

और मुस्लिम में यह शब्द "मगर ग़रकद का पेड़ बेशक वह यहूद के पेड़ों में से है" ज्यादा है।

١٣٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّهُ لَيَأْتِي الرَّجُلُ الْعَظِيمُ السَّمِينُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَزِنُ عِنْدَ اللَّهِ جَنَاحَ بَعُوضَةٍ» وَقَالَ: اِقْرَءُوا: ﴿ فَلَا نُقِيمُ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَزْنًا ﴾ ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٤٧٢٩، ٢٧٨٥ ﴾

137. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेषक क्यामत के दिन एक हटटा कटठा आदमी आयेगा लेकिन अल्लाह के यहां उसका वज़न मच्छर के पंख के बराबर भी नहीं होगा और आपने फरमायाः यह कुरआनी आयत पढ़ोः "हम क्यामत के दिन उनका कोई वजन नहीं करेंगे"। (बुखारी, 4729 मुस्लिम, 2785)

١٣٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ عَنْ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ «اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ» قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا هُنَّ قَالَ «اَلشِّرْكُ بِاللهِ وَالسِّحْرُ وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلَّا

بِالْحَقِّ وَأَكْلُ الرِّبَا وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٧٦٦، ٨٩ ﴾

138. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सात हलाक कर देने वाली चीज़ों से बचो। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल वह सात हलाक करने वाली चीज़ें कौन सी हैं? फरमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, किसी की नाहक जान लेना जिसे अल्लाह ने हराम करार दिया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जंग के दिन भागना और पाक दामन औरतों पर आरोप लगाना। (बुखारी, 2766, मुस्लिम, 89)

١٣٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَتَقَارَبُ الزَّمانُ ، وَيَنْقُصُ الْعَمَلُ، وَيُلْقَى الشُّحُّ ، وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ» قَالُوا: وَمَا الْهَرْجُ؟ «قَالَ الْقَتْلُ الْقَتْلُ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٠٦١، ١٥٧ ﴾

139. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जमाना करीब होता जायेगा और अमल कम होता जायेगा और दिलों में लालच डाल दिया जायेगा और फितने जाहिर होने लगेंगे और हर्ज की अधिकता होगी। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल हर्ज क्या है? आपने फरमायाः कत्ल कत्ल (बुखारी, 7061, मुस्लिम, 157)

١٤٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي النِّدَاءِ وَالصَّفِّ الْأَوَّلِ ثُمَّ لَمْ يَجِدُوا إِلَّا أَنْ يَسْتَهِمُوا عَلَيْهِ لَاسْتَهَمُوا، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي التَّهْجِيرِ لَاسْتَبَقُوا إِلَيْهِ ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِي الْعَتَمَةِ وَالصُّبْحِ لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦١٥ ، ٤٣٧﴾

140. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अगर लोगों को यह मालूम हो जाये कि अजान कहने और पहली सफ में नमाज़ पढ़ने में कितना सवाब मिलता है फिर उनके लिये कुरआ अन्दाज़ी के सिवा कोई चारा बाकी नहीं रहेगा तो फिर यह लोग कुरआ अन्दाज़ी ही करते और अगर लोगों को मालूम हो जाये कि नमाज़ के लिये जल्दी आने में कितना सवाब है तो इसके लिये एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते और अगर लोगों को मालूम हो जाता कि इशा और सुबह की नमाज़ पढ़ने में कितना सवाब है तो वह घुटनों के बल पर घिसटते हुये आते। (बुखारी, 615 मुस्लिम, 437)

١٤١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِذَا أُقِيمَتِ الصَّلَاةُ ، فَلَا تَأْتُوهَا تَسْعَوْنَ ، وَأْتُوهَا تَمْشُونَ عَلَيْكُمُ السَّكِينَةُ ، فَمَا أَدْرَكْتُمْ فَصَلُّوا ، وَمَا فَاتَكُمْ فَأَتِمُّوا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٩٠٨ ، ٩٠٢﴾

141. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब नमाज़ के लिये तकबीर कही जाये तो दौड़ते हुये मत जाओ बल्कि पूरे सुकून के साथ जाओ नमाज़ का जो हिस्सा पाओ उसे पढ़ लो और जो रह जाये उसको पूरा करो। (बुखारी, 908 मुस्लिम, 902)

١٤٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَزَالُ قَلْبُ الْكَبِيرِ شَابًّا فِي اثْنَتَيْنِ: فِي حُبِّ الدُّنْيَا، وَطُولِ الْأَمَلِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٤٢٠، ١٠٤٦﴾

142. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बूढ़े इन्सान का दिल दो चीज़ों के बारे में हमेशा जवान रहता है दुनिया की मुहब्बत और लम्बी जिन्दगी की आशा (बुखारी, 6420 मुस्लिम, 1046)

١٤٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يُشِيرُ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلَاحِ ؛ فَإِنَّهُ لَا يَدْرِي لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدِهِ فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنْ النَّارِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٧٠٧٢، ٢٦١٧﴾

143. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में से कोई अपने भाई की तरफ हथियार से इशारा न करे क्योंकि वह नहीं जानता संभव है कि शैतान उसके

हाथ से छुड़वा दे और फिर वह इसकी वजह से जहन्नम के गढ़े में गिर पड़े। (बुखारी, 7072 मुस्लिम, 2617)

١٤٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لأَنْ يَحْتَزِمَ أَحَدُكُمْ حُزْمَةً مِنْ حَطَبٍ فَيَحْمِلَهَا عَلَى ظَهْرِهِ فَيَبِيعَهَا خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَسْأَلَ رَجُلاً يُعْطِيهِ أَوْ يَمْنَعُهُ». ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٢٠٧٤، ١٠٤٢﴾

144. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वो शख़्स जो लकड़ी का ढ़ेर अपनी पीठ पर लाद कर लाये और उसे बेचे, यह उससे बेहतर है जो किसी के सामने हाथ फैलाये चाहे वह उसे कुछ दे या न दे। (बुखारीः 2074 मुस्लिम, 1042)

١٤٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِالصَّلَاةِ فَتُقَامَ، ثُمَّ أُخَالِفَ إِلَى مَنَازِلِ قَوْمٍ لَا يَشْهَدُونَ الصَّلَاةَ، فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ ٢٤٢٠، ٦٥١﴾

145. हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मैंने तो यह इरादा कर लिया कि नमाज़ की जमाअत काइम करने का हुक्म देकर मैं खुद उन लोगों के घरों पर जाऊं जो जमाअत में हाज़िर नहीं होते और उनके घरों को जला दूं। (बुखारी, 2420 मुस्लिम, 651)

١٤٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَيْسَ صَلَاةٌ أَثْقَلَ عَلَى الْمُنَافِقِينَ مِنَ الْفَجْرِ وَالْعِشَاءِ ، وَلَوْ يَعْلَمُونَ مَا فِيهِمَا لَأَتَوْهُمَا وَلَوْ حَبْوًا» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٥٧، ٦٥١ ﴾

146. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुनाफिकों पर इषा और फज्र की नमाज़ से ज्यादा बोझल कोई नमाज़ नहीं है और अगर उनको मालूम हो जाये कि उन दोनों नमाज़ों में कितना सवाब है तो वह घुटनों के बल घिसटते हुये आयेंगे। (बुखारी, 657 मुस्लिम, 651)

١٤٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَا مِنْ يَوْمٍ يُصْبِحُ الْعِبَادُ فِيهِ ، إِلَّا مَلَكَانِ يَنْزِلَانِ فَيَقُولُ أَحَدُهُمَا: اَللَّهُمَّ أَعْطِ مُنْفِقًا خَلَفًا ، وَيَقُولُ الْآخَرُ: اَللَّهُمَّ أَعْطِ مُمْسِكًا تَلَفًا» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٤٤٢، ١٠١٠ ﴾

147. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि जब बन्दे सुबह को उठते हैं तो दो फरिश्ते आसमान से न उतरते हों तो उन दोनों में से एक कहता है ऐ अल्लाह खर्च करने वाले को उसका बदला दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह बखील के माल को खत्म कर दे। (बुखारी, 1442 मुस्लिम, 1010)

١٤٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: مَا لِعَبْدِي الْمُؤْمِنِ عِنْدِي جَزَاءٌ إِذَا قَبَضْتُ صَفِيَّهُ مِنْ أَهْلِ الدُّنْيَا ثُمَّ احْتَسَبَهُ إِلَّا الْجَنَّةَ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٦٤٢٤﴾

148. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि मेरे उस मोमिन बन्दे का जिस की मैं कोई कीमती चीज़ दुनिया से उठा लूं और वह इस पर सवाब की निय्यत से सब्र कर ले तो उसका बदला मेरे यहां केवल जन्नत है। (बुखारी, 6424)

١٤٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «يَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ لَا يُبَالِي الْمَرْءُ مَا أَخَذَ مِنْهُ، أَمِنَ الْحَلَالِ، أَمْ مِنَ الْحَرَامِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٢٠٥٩﴾

149. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों पर एक ऐसा जमाना आयेगा कि इन्सान यह परवाह नहीं करेगा कि उसने जो कमाया है वह हलाल से है या हराम से है। (बुखारी, 2059)

١٥٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «عَجِبَ اللهُ مِنْ قَوْمٍ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ فِي السَّلَاسِلِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٣٠١٠﴾

150. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ऐसे लोगों पर अल्लाह को तअज्जुब (आश्चर्य) होगा जो जन्नत में दाखिल होंगे हालांकि दुनिया में अपने कुफ्र की वजह से वह बेड़ियों में थे ¼यानी पहले काफिर थो फिर मुसलमान हो गये½। (बुखारी 3010)

١٥١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ ، وَلَا يَصْعَدُ إِلَى اللهِ إِلَّا الطَّيِّبُ ، فَإِنَّ اللهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يُرَبِّيهَا لِصَاحِبِهَا كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُم فُلُوَّهُ حَتَّى تَكُونَ مِثلَ الجَبَلِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٧٤٣٠﴾

151. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हलाल कमाई से एक खुजूर के बराबर भी खैरात की और अल्लाह तआला तक हलाल कमाई ही की खैरात पहुँचती है तो अल्लाह उसे अपने दायें हाथ से कुबूल कर लेता है और खैरात करने वाले के लिये उसे इस तरह बढ़ाता रहता है जैसे तुममें से कोई बेछेरे को पालता पोसता है यहां तक कि वह पहाड़ के बराबर हो जाता है। (बुखारी, 7430)

١٥٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «قَالَ اللهُ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِيَ الصَّالِحِيْنَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ ، وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ ، وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَر» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٧٤٩٨﴾

152. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि मैंने जन्नत में अपने नेक बन्दों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन को ना आखों ने देखा न कानों ने सुना और न किसी इन्सान के दिल में उसका ख्याल गुज़रा होगा। (बुखारी, 7498)

١٥٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلِمَةٌ لِأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا ؛ فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلَا دِرْهَمٌ ، مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لِأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِهِ ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ ، أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٦٥٣٤﴾

153. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अपने भाई पर जुल्म किया हो तो उसे चाहिये कि दुनिया ही में उससे मामला रफा दफा कर ले क्योंकि क्यामत के दिन न कोई दीनार होगा और ना दिरहम इससे पहले कि उसकी नेकियों को उस मजलूम

को दे दिया जाये। अगर उसके पास कोई नेकी नहीं होगी तो मजलूम के गुनाहों को जुल्म करने वाले पर डाल दिया जायेगा। (बुखारी, 1534)

١٥٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ ، وَمَنْ يُطِعِ الأَمِيْرَ فَقَدْ أَطَاعَنِي ، وَمَنْ يَعْصِ الأَمِيْرَ فَقَدْ عَصَانِي»﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ- ٢٩٥٧، ١٨٣٥﴾

154. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने मेरी अताअत की तो हकीकत में उसने अल्लाह की अताअत की और जिसने मेरी नाफरमानी की उसने अल्लाह की नाफरमानी की और जिसने अमीर की अताअत की उसने मेरी अताअत की और जिसने अमीर की नाफरमानी की तो उसने मेरी नाफरमानी की। (मुस्लिम, 1835)

١٥٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ ؛ لَضَحِكْتُمْ قَلِيلًا وَلَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ- ٦٤٨٥، ٣٢٥٩﴾

155. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर तुम लोगों को उस चीज़ के बारे में मालूम हो जाये जो मैं जानता हूं तो हसोंगे कम और रोओगे ज्यादा। (बुखारी, 6485)

١٥٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَا أَنْزَلَ اللهُ دَاءً ، إِلَّا أَنْزَلَ لَهُ شِفَاءً» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٥٦٧٨﴾

156. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह ने हर मर्ज के साथ षिफा (एलाज) भी उतारा है। (बुखारी, 5678)

١٥٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «انْظُرُوا إِلَى مَنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ، وَلَا تَنْظُرُوا إِلَى مَنْ هُوَ فَوْقَكُمْ ؛ فَهُوَ أَجْدَرُ أَنْ لَا تَزْدَرُوا نِعْمَةَ الله عَلَيْكُمْ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٢٩٦٣﴾

157. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने से कमतर की तरफ देखो और अपने से ऊपर की तरफ न देखो यह तुम्हारे लिये बेहतर है कि अल्लाह की नेमतों को मामूली न समझो। (मुस्लिम 1041)

١٥٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ سَأَلَ النَّاسَ أَمْوَالَهُمْ تَكَثُّراً فَإِنَّمَا يَسْأَلُ جَمْراً ، فَلْيَسْتَقِلَّ ، أَوْ لِيَسْتَكْثِرْ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ١٠٤١﴾

158. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोगों से आप माल बढ़ाने के लिये (भीख)

मांगता है तो वह आग का अंगारा मांगता है तो चाहे वह आग के अंगारे को कम कर ले या ज्यादा कर ले। (मुस्लिम, 1041)

١٥٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «لَا يَجْزِي وَلَدٌ وَالِدًا إِلَّا أَنْ يَجِدَهُ مَمْلُوكًا فَيَشْتَرِيَهُ فَيُعْتِقَهُ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ١٥١٠﴾

159. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लड़के के लिये अपने बाप को बेहतरीन बदला यह है कि उसको गुलाम की हालत में पाये तो उसे खरीद कर आज़ाद कर दे। (मुस्लिम 1510)

١٦٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: «إِنَّ الدِّينَ يُسْرٌ ، وَلَنْ يُشَادَّ الدِّينَ أَحَدٌ إِلَّا غَلَبَهُ ؛ فَسَدِّدُوا وَقَارِبُوا وَأَبْشِرُوا، وَاسْتَعِينُوا بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنْ الدُّلْجَةِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٣٩﴾

160. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेषक दीन आसान है और जो षख्स दीन में सख्ती अपनाये गा तो उस पर दीन गालिब आ जायेगा। इसलिये अपने अमल में मजबूती अपनाओ और जहां संभव हो मध्यमार्ग अपनाओ और खुष हो जाओ और सुबह श

दोपहर शाम और किसी कद्र रात में अल्लाह से मदद हासिल करो। (बुखारी–39)

١٦١- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «مَنْ اقْتَنَى كَلْبًا ، إِلَّا كَلْبَ مَاشِيَةٍ ، أَوْ ضَارِيًا ، أَوْ زَرْعٍ، نَقَصَ مِنْ عَمَلِهِ كُلَّ يَوْمٍ قِيرَاطَانِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٤٨٢، ١٥٧٥﴾

161. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने शिकारियों और मवेशियों की हिफाज़त की गर्ज़ के सिवा कुत्ता पाला तो उसके सवाब में से रोज़ाना दो कीरात की कमी हो जाती है। (बुखारी 5482, मुस्लिम 1575)

١٦٢- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «وَيْلَكُمْ لَا تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٢١، ٦٦﴾

162. अब्दुल्लाह बिन रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगो मेरे बाद फिर काफिर मत हो जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (बुखारी 121 मुस्लिम 66)

١٦٣- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «لَا يُقِيمُ الرَّجُلُ الرَّجُلَ مِنْ مَجْلِسِهِ ثُمَّ يَجْلِسُ فِيهِ، وَلَكِنْ تَفَسَّحُوا وَتَوَسَّعُوا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٢٦٩، ٢١٧٧﴾

163. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कोई शख्स किसी दूसरे शख्स को उसके बैठने की जगह से न उठाये कि खुद वहां बैठ जाये और आने वाले को मज्लिस में जगह दे दिया करो और फराखी कर दिया करो। (बुखारी 6269 मुस्लिम 2177)

١٦٤- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِذَا كُنْتُمْ ثَلَاثَةً فَلَا يَتَنَاجَى اثْنَانِ دُونَ صَاحِبِهِمَا فَإِنَّ ذَلِكَ يُحْزِنُهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٢٩٠، ٢١٨٤﴾

164. अब्दुल्लाह बिन उमर रयिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तीन लोग हों तो दूसरा तीसरे को छोड़ कर काना फूंसी न करे। क्योंकि इसकी वजह से उसको दुख होगा''। (बुखारी 6290 मुस्लिम 2184)

١٦٥- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّمَا مَثَلُ صَاحِبِ الْقُرْآنِ كَمَثَلِ صَاحِبِ الْإِبِلِ الْمُعَقَّلَةِ ، إِنْ عَاهَدَ عَلَيْهَا أَمْسَكَهَا، وَإِنْ أَطْلَقَهَا ذَهَبَتْ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٠٣١، ٧٨٩﴾

165. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक हाफिजे कुरआन की मिसाल रस्सी से बंधे हुये ऊंट के मालिक जैसी है अगर वह उस की देखभाल करेगा तो वह उसे रोक सकेगा और अगर छोड़ देगा तो वह भाग जायेगा। (बुखारी, 5031 मुस्लिम, 789)

١٦٦- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّ الْغَادِرَ يُنْصَبُ لَهُ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ، فَيُقَالُ: هٰذِهِ غَدْرَةُ فُلَانِ بْنِ فُلَانٍ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦١٧٨، ١٧٣٥﴾

166. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वचन तोड़ने वाले के लिये क्यामत में एक झण्डा उठाया जायेगा और पुकारा जायेगा कि यह फुंला बिन फुंला की दगाबाज़ी का निशान है। (बुखारी, 6178 मुस्लिम, 1735)

١٦٧- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «الَّذِي تَفُوتُهُ صَلَاةُ الْعَصْرِ كَأَنَّمَا وُتِرَ أَهْلَهُ وَمَالَهُ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٥٢، ٦٢٦﴾

167. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसकी अस्र की नमाज़ छूट गयी तो गोया कि उसका घर और माल सब छीन लिया गया। (बुखारी, 552 मुस्लिम, 626)

١٦٨- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «لَايَزَالُ الْمُؤْمِنُ فِي فُسْحَةٍ مِنْ دِينِهِ مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرَامًا» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٦٨٦٢﴾

168. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मोमिन उस वक्त तक अपने दीने के बारे में तंगी में नहीं रहता है जब तक नाहक खून न करे। (बुखारी, 6862)

١٦٩- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ مِنْ دُعَاءِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: «اَللّٰهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٢٧٣٩﴾

169. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह

दुआ "अल्लाहुममा इन्नी अऊजू बिक मिन जवाले निअ्मतिक व तहव्वुले आफियतिक व फुजाअति निकमतिक व जमीए सखतिक" ऐअल्लाह मैं तेरी नेमत खत्म होजाने और तेरी आफीयत के बदल जाने और तेरी अचानक पकड से और तेरे तमाम नाराजगी से पनाह मांगता हुं (मुस्लिम, 2739)

١٧٠- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «مَنْ خَلَعَ يَداً مِنْ طَاعَةٍ ، لَقِيَ اللهَ يَوْمَ القِيَامَةِ لَا حُجَّةَ لَهُ ، وَمَنْ مَاتَ وَلَيْسَ فِي عُنُقِهِ بَيْعَةٌ ، مَاتَ مِيْتَةً جَاهِلِيَّةً» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ١٨٥١﴾

170. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने फरमां बरदारी से हाथ खींच लिया (फरमांबरदारी नहीं की) तो क्यामत के दिन अल्लाह से मुलाकात के वक्त उसके लिये कोई हुज्जत नहीं होगी और जो बैअत न करने की हालत में मर गया तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत है। (मुस्लिम, 1851)

١٧١- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ ، فَلَمَّا قَدِمْنَا المَدِينَةَ قَالَ لِي: «اُدْخُلِ المَسْجِدَ فَصَلِّ رَكْعَتَيْنِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٠٨٧، ٧١٥﴾

171. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि मैं एक सफर में नबी सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम के साथ में था जब हम मदीना आये तो आप ने मुझसे फरमायाः जब तुम मुस्जिद में दाखिल हो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो। (बुखारी, 3087 मुस्लिम, 715)

١٧٢- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «كُلُّ مَعْرُوفٍ صَدَقَةٌ»﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٠٢١، ١٠٠٥ ﴾

172. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया हर भलाई सदका है। (बुखारी, 6021)

١٧٣- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «رَحِمَ اللهُ رَجُلًا سَمْحًا إِذَا بَاعَ، وَإِذَا اشْتَرَى، وَإِذَا اقْتَضَى» ﴿ رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٢٠٧٦ ﴾

173. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ऐसे शख्स पर दया करे जो बेचते खरीदते और तक़ाज़ा करते वक्त नर्मी से काम ले। (बुखारी, 2076)

١٧٤- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «مَنْ قَالَ حِينَ يَسْمَعُ النِّدَاءَ: اَللَّهُمَّ رَبَّ هَذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ، وَالصَّلَاةِ الْقَائِمَةِ، آتِ مُحَمَّداً

الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ ، وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَحْمُودًا الَّذِي وَعَدْتَهُ ، حَلَّتْ لَهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٦١٤﴾

174. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अजान सुन कर यह कहे "अल्लाहुम्म रब्ब हाजिहिद दावतित ताम्मति वस्सलातिल काइमति आति मुहम्मद निल वसीलत वल फजीलत वब असहू मकामम महमूद अल लज़ी वअदतहू , तो उसे क्यामत के दिन मेरी शिफाअत मिलेगी। (बुखारी, 614)

١٧٥- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّ فِي اللَّيْلِ لَسَاعَةً لَا يُوَافِقُهَا رَجُلٌ مُسْلِمٌ يَسْأَلُ اللهَ خَيْراً مِّنْ أَمْرِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ، إِلَّا أَعْطَاهُ إِيَّاهُ ، وَذَلِكَ كُلَّ لَيْلَةٍ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٧٥٧﴾

175. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक रात में एक ऐसी घड़ी होती है मुस्लिम बन्दा उसमें अल्लाह से दुनिया और आखिरत की भलाई मांगता है तो अल्लाह उसको अता कर देता है और ऐसा हर रात में होता है। (मुस्लिम, 757)

١٧٦- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ إِنَّ عَلَى اللهَ عَزَّ وَجَلَّ عَهْداً لِمَنْ يَشْرَبُ الْمُسْكِرَ أَنْ يَسْقِيَهُ مِنْ طِينَةِ

الْخُبَالِ ». قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا طِينَةُ الْخُبَالِ قَالَ «عَرَقُ أَهْلِ النَّارِ أَوْ عُصَارَةُ أَهْلِ النَّارِ». ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٢٠٠٢﴾

176. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह का यह अहद है कि जो नशाआवर चीज़ पियेगा तो उसको तीनतुल खबाल पिलायेगा सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल तीनतुल खबाल क्या है। आपने फरमायाः जहन्नमियों का पसीना। (मुस्लिम, 2002)

١٧٧- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «مَنْ خَافَ أَنْ لَا يَقُومَ مِنْ آخِرِ اللَّيْلِ فَلْيُوْتِرْ أَوَّلَهُ، وَمَنْ طَمِعَ أَنْ يَقُوْمَ آخِرَهُ فَلْيُوْتِرْ آخِرَ اللَّيْلِ ، فَإِنَّ صَلَاةَ آخِرِ اللَّيْلِ مَشْهُودَةٌ ، وَذَلِكَ أَفْضَلُ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٧٥٥﴾

177. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसको यह डर हो कि रात के आखिर में वित्र नहीं पढ़ सकेगा तो उसे चाहिये कि अव्वल वक्त में पढ़ ले और जो इस बात का इच्छुक हो कि रात की आखिरी पहर में पढ़े तो वह रात के आखिरी पहर में वित्र पढ़े बेशक रात की आखिरी नमाज गवाही देगी और यह अफज़ल है। (मुस्लिम, 755)

١٧٨- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكُ الصَّلَاةِ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٨٢﴾

178. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आदमी को शिर्क और कुर्फ के बीच फर्क करने वाली चीज़ नमाज़ छोड़ना है। (मुस्लिम, 82)

١٧٩- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّ اللهَ لَا يَقْبِضُ الْعِلْمَ انْتِزَاعًا يَنْتَزِعُهُ مِنَ الْعِبَادِ، وَلَكِنْ يَقْبِضُ الْعِلْمَ بِقَبْضِ الْعُلَمَاءِ ،حَتَّى إِذَا لَمْ يُبْقِ عَالِمًا، اتَّخَذَ النَّاسُ رُؤُوْسًا جُهَّالًا،فَسُئِلُوا فَأَفْتَوْا بِغَيْرِ عِلْمٍ،فَضَلُّوا وَأَضَلُّوا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ:١٠٠، ٢٦٧٣﴾

179. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह इल्म को इस तरह से नहीं उठा लेगा कि उसके बन्दों से छीन ले वह ओलमा को मौत देकर इल्म को उठायेगा यहां तक कि जब कोई आलिम बाकी नहीं रहेगा तो लोग जाहिलों को सरदार बना लेंगे उनसे सवालात किये जायेंगे और वह बगैर इल्म के जवाब देंगे इस लिये खुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। (बुखरी, 100 मुस्लिम, 2673)

١٨٠- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمْ يَكُنْ النَّبِيُّ ﷺ فَاحِشًا وَلَا مُتَفَحِّشًا وَكَانَ يَقُولُ: «إِنَّ مِنْ خِيَارِكُمْ أَحْسَنَكُمْ أَخْلَاقًا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٣٥٥٩، ٢٣٢١﴾

180. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बदज़ुबान और लड़ने झगड़ने वाले नहीं थे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाया करते थेः तुम में से सबसे बेहतर शख़्स वह है जिसके अखलाक सबसे अच्छे हों। (बुखारी, 3559 मुस्लिम, 2321)

١٨١- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «لَيْسَ الْوَاصِلُ بِالْمُكَافِئِ ، وَلٰكِنَّ الْوَاصِلُ الَّذِيْ إِذَا قُطِعَتْ رَحِمُهُ وَصَلَهَا» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٥٩٩١﴾

181. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया किसी काम का बदला देना सिला रहमी (रिष्ता नाता जोड़ना) नहीं है बल्कि सिला रहमी करने वाला शख़्स वह है कि जब उसके साथ सिला रहमी का मामला न किया जा रहा हो तब भी वह सिला रहमी करे। (बुखारी, 5991)

١٨٢- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «إِنَّ الْمُقْسِطِينَ عِنْدَ اللَّهِ عَلَى مَنَابِرَ مِنْ نُورٍ عَنْ يَمِينِ الرَّحْمٰنِ - عَزَّ وَجَلَّ - وَكِلْتَا يَدَيْهِ يَمِينٌ ، اَلَّذِينَ يَعْدِلُونَ فِي حُكْمِهِمْ وَأَهْلِيهِمْ وَمَا وَلُوْا» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ١٨٢٧﴾

182. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक इन्साफ करने वाले अल्लाह के यहां रहमान के दायें तरफ नूर के मिंबरों पह होंगे और उसके दोनों हाथ दायां हैं जो लोग अपने फैसलों में अपने परिवार में और अपने मातहतों के बारे में इंसाफ से काम लेते हैं। (मुस्लिम, 1827)

١٨٣- عَن جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَنَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةً، يَعْنِي الْبَدْرَ ، فَقَالَ: «إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا الْقَمَرَ لَا تُضَامُّونَ فِي رُؤْيَتِهِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لَا تُغْلَبُوا عَلَى صَلَاةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا فَافْعَلُوا ، ثُمَّ قَرَأَ : ﴿.وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ﴾» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٥٤، ٦٣٣﴾

183. जरीर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि उन्होंने कहा कि हमने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक रात चांद की तरफ देखा अर्थात

चौदहवीं के चांद को तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक तुम लोग अपने रब को देखोगे जिस तरह चांद को देख रहे हो उसको देखने में तुम को कोई परेशानी नहीं होगी इस लिये अगर तुम ऐसा कर सकते हो कि सूरज निकलने से पहले वाली नमाज़ फज्र और सूरज डूबने से पहले वाली नमाज़ अस्र से तुम्हें कोई चीज़ रोक न सके तो ऐसा ज़रूर करो आप ने यह आयत तिलावत की "पस अपने मालिक की हम्द व तस्बीह कर सूरज निकलने और डूबने से पहले'। (बुखारी, 554 मुस्लिम, 633)

١٨٤- عَن جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ الله ﷺ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُوْلَ الله ﷺ عَلَى إِقَامِ الصَّلَاةِ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ، وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ. ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٧، ٩٧ ﴾

184. जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से नमाज़ काइम करने जकात देने और हर मुसमलान को नसीहत करने के लिये बैअत की। (बुखारी, 57 मुस्लिम, 97)

١٨٥- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّ هَذِهِ النَّارَ إِنَّمَا هِيَ عَدُوٌّ لَكُمْ، فَإِذَا نِمْتُمْ فَأَطْفِئُوهَا عَنْكُمْ» ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٢٩٤، ٢٠١٦ ﴾

185. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

बेशक यह आग तुम्हारी दुष्मन है इसलिये जब सोओ तो उसको बुझा दिया करो। (बुखारी, 6294 मुस्लिम, 2016)

١٨٦- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «اَلْمُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِ كَالْبُنْيَانِ، يَشُدُّ بَعْضُهُ بَعْضًا» وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٤٤٦، ٢٥٨٥﴾

186. अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक मोमिन दूसरे मोमिन के लिये मकान की तरह है एक को दूसरे से सपोट (ताकत) मिलती है फिर आपने एक हाथ की उंगली को दुसरे हाथ की उंगली में दाखील किया। (बुखारी, 2446 मुस्लिम, 2585)

١٨٧- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِنَّ اللهَ لَيُمْلِي لِلظَّالِمِ حَتَّى إِذَا أَخَذَهُ لَمْ يُفْلِتْهُ» قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَكَذٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ﴾ ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٤٦٨٦، ٢٥٨٣﴾

187. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह जालिम को मोहलत देता है लेकिन जब पकड़ता है तो फिर नहीं छोड़ता है। फिर आप ने यह आयत पढ़ी ''और तेरे परवरदिगार की पकड़ इसी तरह है जब वह बस्ती वालों को पकड़ता है जो अपने ऊपर जुल्म करते हैं बेशक अल्लाह की पकड़ बड़ी

तकलीफ देने वाली और बड़ी सख्त है''। (बुखारी, 4686 मुस्लिम, 2583)

١٨٨- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يَبْسُطُ يَدَهُ بِاللَّيْلِ ؛ لِيَتُوبَ مُسِيءُ النَّهَارِ ، وَيَبْسُطُ يَدَهُ بِالنَّهَارِ ؛ لِيَتُوبَ مُسِيءُ اللَّيْلِ ، حَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٢٧٥٩﴾

188. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक अल्लाह तआला रात में अपने हाथ को फैलाता है ताकि दिन में बुराई करने वाला तौबा कर ले और अल्लाह तआला दिन में अपने हाथ को फैलाता है ताकि रात में बुराई करने वाला तौबा करले यहां तक कि सूरज पष्चिम से निकले। (मुस्लिम, 2759)

١٨٩- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «فُكُّوا الْعَانِيَ ، وَأَطْعِمُوا الجَائِعَ ، وَعُودُوا المَرِيضَ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٣٠٤٦﴾

189. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कैदी को छुड़ाओ भूखे को खाना खिलाओ और बीमार की इयादत (हाल चाल मालूम) करो। (बुखारी, 3046)

١٩٠- عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: «إِذَا مَرِضَ الْعَبْدُ أَوْ سَافَرَ ، كُتِبَ لَهُ مِثْلُ مَا كَانَ يَعْمَلُ مُقِيمًا صَحِيحًا» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٢٩٩٦﴾

190. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब बन्दा बीमार होता या सफर करता है तो उसके लिये उन तमाम इबादतों का सवाब लिखा जाता है जिन को वह घर या तनदुरूस्ती के वक्त किया करता था। (बुखारी, 2996)

١٩١- عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ـ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ «لَا يَرْمِي رَجُلٌ رَجُلًا بِالْفُسُوقِ ، وَلَا يَرْمِيهِ بِالْكُفْرِ ، إِلَّا ارْتَدَّتْ عَلَيْهِ إِنْ لَمْ يَكُنْ صَاحِبُهُ كَذَلِكَ» ﴿رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ: ٦٠٤٥﴾

191. अबू जर रज़ियल्लाहु तआला बयान करते हैं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहते हुये सुनाः अगर कोई शख्स किसी पर कुफ्र और फिस्क़ का इलजाम लगाये और वह हकीकत में काफिर या फासिक न हो तो खुद कहने वाला काफिर या फासिक़ हो जाता है। (बुखारी, 6045)

١٩٢- عَنْ أَبِي ذَرٍّ ﷺ قَالَ: قِيلَ لِرَسُولِ الله ﷺ: أَرَأَيْتَ الرَّجُلَ يَعْمَلُ الْعَمَلَ مِنَ الْخَيْرِ وَيَحْمَدُهُ النَّاسُ عَلَيْهِ قَالَ: «تِلْكَ عَاجِلُ بُشْرَى الْمُؤْمِنِ» ﴿رَوَاهُ مُسْلِمٌ: ٢٦٤٢﴾

192. अबू ज़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा गया उस आदमी के बारे में आप का क्या ख्याल है जो भलाई का काम करता है तो लोग उसकी प्रशंसा (तारीफ) करते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया यह मोमिन के लिये फौरी खुश्खबरी है। (मुस्लिम, 2642)

١٩٣- عَنْ اِبْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَّ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ كَانَ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: «لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ الْعَظِيمُ الحَلِيمُ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ، لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ رَبُّ السَّمٰوَاتِ ، وَرَبُّ الْأَرْضِ ، وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٣٤٦، ٢٧٣٠﴾

193. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुख परेशानी के वक्त यह कहते थे ''लाइलाहा इल्लल्लाहुल अजीमुल हलीम लाइलाहा इल्लल्लाहो रब्बुल अर्शिल अजीम लाइलाहा इल्लल्लाहो रब्बुस्समावाती व–रब्बुल अर्ज़ व रब्बुल अर्शिल करीम'' (बुखारी, 6346 मुस्लिम, 2730)

١٩٤- عن ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: «لَوْ كَانَ لِابْنِ آدَمَ وَادِيَانِ مِنْ مَالٍ لَابْتَغَى ثَالِثًا، وَلَا يَمْلَأُ جَوْفَ ابْنِ آدَمَ إِلَّا التُّرَابُ ، وَيَتُوبُ اللهُ عَلَى مَنْ تَابَ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٤٣٦، ١٠٤٨﴾

194. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुये सुना अगर आदम की औलाद (इंसान) के पास दौलत की दो वादियां हो जायें तो वह तीसरे की इच्छा करेगा और आदम की औलाद का पेट केवल मिटटी ही भर सकती है और जो अल्लाह से तौबा करेगा तो अल्लाह उसके तौबा को क़ुबूल करेगा। (बुखारी, 6436 मुस्लिम, 1048)

١٩٥- عن حَكِيمِ بْنَ حِزَامٍ رضي الله عنه عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «اَلْبَيِّعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَتَفَرَّقَا ، فَإِنْ صَدَقَا وَبَيَّنَا بُورِكَ لَهُمَا فِي بَيْعِهِمَا ، وَإِنْ كَذَبَا وَكَتَمَا مُحِقَتْ بَرَكَةُ بَيْعِهِمَا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢١١٠، ١٥٣٢﴾

195. हकीम बिन हिज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खरीदने और बेचने वाले जब तक एक दूसरे से अलग न हो जायें उन्हें इख्तियार बाकी रहता है, अब अगर दोनों ने सच्चाई अपनायी और हर बात साफ साफ बयान किया तो उनके बेचने और खरीदने में बरकत होती है और अगर झूठ

बोला और कोई बात छिपायी तो उनकी तिजारत से बरकत खत्म कर दी जाती है। (बुखारी, 2110 मुस्लिम, 1532)

١٩٦- عَنْ سَعْد بن أَبِي وقاص رضي الله عنه قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ الله ﷺ يَقُولُ: «مَنْ تَصَبَّحَ سَبْعَ تَمَرَاتٍ عَجْوَةً لَمْ يَضُرَّهُ ذٰلِكَ الْيَوْمَ سُمٌّ وَلَا سِحْرٌ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٧٦٩، ٢٠٤٧﴾

196. सअ्द बिन अबू वक़ास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहते हुये सुना जिसने सुबह सवेरे सात अज़वा खुजूरें खायीं तो उस दिन उसपर कोई जहर और जादू असर नहीं करेगा। (बुखारी 5769 मुस्लिम 2047)

١٩٧- عَنْ عَبْدِ اللهِ بن مَسعُودٍ رضي الله عنه قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: «لَا يَحِلُّ دَمُ امْرِئٍ مُّسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ، وَأَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَّا بِإِحْدٰى ثَلَاثٍ: اَلنَّفْسُ بِالنَّفْسِ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي، وَالمَارِقُ مِنْ الدِّينِ التَّارِكِ لِلْجَمَاعَةِ» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٦٨٧٨، ١٦٧٦﴾

197. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो मुसलमान यह गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, उस का खून हलाल

नहीं है मगर तीन चीज़ों की वजह से। जान के बदले जान, शादीशुदा होकर ज़िना करने वाला और इस्लाम से निकल जाने वाला, जमाअत को छोड़ देने वाला। (बुखारी, 6878 मुस्लिम, 1676)

١٩٨- عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: «إِذَا أَنْفَقَ الْمُسْلِمُ نَفَقَةً عَلَى أَهْلِهِ وَهُوَ يَحْتَسِبُهَا، كَانَتْ لَهُ صَدَقَةً.» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٣٥١، ١٠٠٢﴾

198. अबू मसऊद अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई मुसलमान अल्लाह का हुक्म मानने के मकसद से अपने बाल बच्चों पर खर्च करता है तो यह उसके लिये सदका होता है। (बुखारी 5351, मुस्लिम 1002)

١٩٩- عَنْ زَيْدِ بْنُ خَالِدٍ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: «مَنْ جَهَّزَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَقَدْ غَزَا، وَمَنْ خَلَفَ غَازِيًا فِي سَبِيلِ اللهِ بِخَيْرٍ فَقَدْ غَزَا» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٢٨٤٣، ١٨٩٥﴾

199. जैद बिन खालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले के लिये सामान तैयार करके दिया तो गोया वह खुद जिहाद में गया। और जिसने भलाई से जिहाद करने वाले

के घर बार की निगरानी की तो गोया कि उसने खुद भी जिहाद किया। (बुखारी, 2843 मुस्लिम, 1895)

٢٠٠- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «تَسَحَّرُوا فَإِنَّ فِي السَّحُورِ بَرَكَةً» ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٩٢٣، ١٠٩٥﴾

200. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सेहरी खाया करो क्योंकि सेहरी खाने में बरकत है। (बुखारी 1923, मुस्लिम, 1095)

٢٠١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَنْظُرُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَى مَنْ جَرَّ إِزَارَهُ بَطَرًا)) ﴿متفق عليه: ٢٠٨٧، ٥٧٨٨﴾

201. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला क्यामत के दिन उस शख़्स की तरफ नजरे रहतम से नहीं देखेगा जो अपने तहबन्द को घमण्ड से लटकाया रहा होगा। (बुखारी, 2087 मुस्लिम, 5788)

٢٠٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ: أَنْفِقْ يَا ابْنَ آدَمَ أُنْفِقْ عَلَيْكَ)) ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٣٥٢، ٩٩٣﴾

202. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह ने कहाः ऐ आदम की औलाद खर्च करो तुम पर भी खर्च किया जायेगा। (बुखारी, 5352, मुस्लिम, 993)

٢٠٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلَّا يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ، أَوَ يُنَصِّرَانِهِ، أَوْ يُمَجِّسَانِهِ ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٤٧٧٥، ٢٦٥٨﴾

203. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर बच्चा फितरते इस्लाम पर पैदा होता है लेकिन उसके मां बाप उसको यहूदी बना देते हैं या ईसाई बना देते हैं या मजूसी बना देते हैं। (बुखारी, 4775, मुस्लिम 2658)

٢٠٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَاتَلَ اللهُ الْيَهُودَ ؛ اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ مَسَاجِدَ)) ﴿ متفق عليه: ٤٣٧، ٥٣٠﴾

204. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यहूदियों पर अल्लाह की लअ्नत हो उन्होंने अपने नबियों की कब्रों को सजदागाह बना लिया। (बुखारी, 437 मुस्लिम, 530)

٢٠٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي ، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي ، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ، ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلَإٍ، ذَكَرْتُهُ فِي مَلَإٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ بِشِبْرٍ ، تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا ، تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا ، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي، أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)) ﴿ متفق عليه: ٧٤٠٥ ، ٢٦٧٥ ﴾

205. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूं और जब भी वह मुझे याद करता है मैं उसके साथ होता हुं जब वह मुझे दिल में याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूं और जब वह मुझे मज्लिस में याद करता है तो मैं उससे बेहतर फरिश्तों की मज्लिस में याद करता हूं और अगर वह मुझ से एक बालिश्त करीब आता है तो मैं उसके एक हाथ करीब हो जाता हूं और अगर वह मेरे एक हाथ करीब आता है तो मैं उससे दो हाथ करीब हो जाता हूं अगर वह मेरे पास चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़ कर आता हूं। (बुखारी, 7405, मुस्लिम, 2675)

٢٠٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمْ اللهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ : إِمَامٌ عَدْلٌ ، وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ الله ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي

الْمَسَاجِدِ ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللهِ اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ ﴿مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ١٤٢٣، ١٠٣١﴾

206. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सात किस्म के लोगों को अल्लाह अपने अर्श के साये में रखेगा उस दिन उसके सिवा और कोई साया नहीं होगा इन्साफ करने वाला हाकिम, वह नौजवान जिसने अपनी जवानी को अल्लाह की इबादत में गुज़ारी हो, वह शख्स जिस का दिल हर वक्त मस्जिद से लगा रहे। जो अल्लाह के लिये मुहब्बत करते हों उसी पर जमा होते और उसी पर अलग होते हों, ऐसा शख्स जिसको किसी खूबसूरत और इज्ज़तदार औरत ने बुलाया तो उसने कहा हो कि मैं अल्लाह से डरता हूं वो इन्सान जो सदका करे और उसको इस तरह छिपाये कि बायें हाथ को भी खबर न हो कि दायें हाथ ने क्या खर्च किया और जो शख्स अल्लाह को तनहाई में याद करे और उसकी आखें आंसुओं से बहने लगें। (बुखारी, 1423, मुस्लिम, 1031)

٢٠٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ـ رضي الله عنه ـ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((يَدُ اللهِ مَلْأَى لَا يَغِيضُهَا نَفَقَةٌ ، سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ، وَقَالَ: أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ، فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ)) ﴿ البخاري: ٧٤١١﴾

207. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह का हाथ भरा हुआ है उसे रात दिन की बख्शिश भी कम नहीं करती। आपने फरमायाः क्या तुम्हें मालूम है कि उसने आसमान और जमीन को पैदा करने से लेकर अब तक कितना खर्च किया है उसने भी इसमें कोई कमी पैदा नहीं की जो उसके हाथ में है (बुखारी 7411)

٢٠٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رضي الله عنه أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا هُنَّ ؟ قَالَ: ((الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلَاتِ)) ﴿ متفق عليه: ٦٨٥٧ ، ٨٩﴾

208. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम सात हलाक कर देने वाली चीज़ों से बचो। लोगों ने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! वह हलाक कर देने वाली क्या हैं। आपने फरमायाः अल्लाह के साथ शिर्क, जादू, नाहक किसी की जान लेना जिसको अल्लाह ने

हराम किया है, सूद खाना, अनाथ के माल को खाना, जंग के दिन पीठ फेर कर भाग जाना, और पाकदामन मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना (बुखारी, 6857, मुस्लिम 89)

٢٠٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَرَدَّى مِنْ جَبَلٍ فَقَتَلَ نَفْسَهُ ؛ فَهُوَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ يَتَرَدَّى فِيهِ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا ، وَمَنْ تَحَسَّى سُمًّا فَقَتَلَ نَفْسَهُ ؛ فَسُمُّهُ فِي يَدِهِ يَتَحَسَّاهُ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِحَدِيدَةٍ ؛ فَحَدِيدَتُهُ فِي يَدِهِ يَجَأُ بِهَا فِي بَطْنِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدًا مُخَلَّدًا فِيهَا أَبَدًا)) ﴿ مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ: ٥٥٧٨، ١٠٩ ﴾

209. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स खुद को पहाड़ से गिरा कर कत्ल कर दे तो वह शख्स जहन्नम में हमेशा ऐसे ही गिरता रहेगा और जिसने खुद को जहर खा कर कत्ल कर दिया तो उसके हाथ में जहर होगा जिसको वह हमेशा जहन्नम में खाता रहेगा और जिसने खुद को लोहे के हथियार से कत्ल कर दिया तो क्यामत के दिन उसके हाथ में लोहे का हथियार होगा जिसको जहन्नम में हमेशा अपने पेट में घूंपता रहेगा। (बुखारी, 5578 मुस्लिम, 109)

٢١٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الْإِيمَانُ بِضْعٌ وَسِتُّونَ شُعْبَةً ، وَالحَيَاءُ شُعْبَةٌ مِنْ الْإِيمَانِ)) ﴿ متفق عليه: ٩ ، ٣٥ ﴾

210. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः ईमान की 60 से ऊपर शाखाएं हैं और हया ½शरम½ भी ईमान की एक शाख है। (बुखारी, 9 मुस्लिम, 35)

٢١١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((كَانَ رَجُلٌ يُدَايِنُ النَّاسَ ، فَكَانَ يَقُولُ لِفَتَاهُ: إِذَا أَتَيْتَ مُعْسِرًا فَتَجَاوَزْ عَنْهُ ؛ لَعَلَّ اللهَ يَتَجَاوَزُ عَنَّا ، فَلَقِيَ اللهَ فَتَجَاوَزَ عَنْهُ)) ﴿ متفق عليه: ٣٤٨٠ ، ١٥٦٢ ﴾

211. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः एक शख्स लोगों को कर्ज दिया करता था और अपने नोकरों से उसने यह कह रखा था कि जब तुम किसी मुफ्लिस को दो जो मेरा कर्जदार हो तो उसे मआफ कर दिया करो संभव है कि अल्लाह तआला भी हम को मआफ कर दे। आप ने फरमायाः जब वह अल्लाह से मिला तो अल्लाह ने उसे बख्श दिया। (बुखारी, 3480 मुस्लिम, 1562)

٢١٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: كُلُّ عَمَلِ ابْنِ آدَمَ لَهُ ، إِلَّا الصَّوْمَ فَإِنَّهُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ ، وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ الله مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ)) ﴿ متفق عليه: ٥٩٢٧ ، ١١٥١ ﴾

212. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला ने फरमायाः इब्ने आदम का हर कर्म उसका है सिवा रोज़ा के ये मेरा है और मैं खुद इसका बदला दूंगा और रोज़ेदार के मुंह की खुश्बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की खुश्बू से भी ज्यादा बेहतर है। (बुखारी, 5927 मुस्लिम, 1151)

٢١٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((تَعَوَّذُوا بِالله مِنْ جَهْدِ الْبَلَاءِ ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ ، وَشَمَاتَةِ الْأَعْدَاءِ)) ﴿ متفق عليه: ٦٦١٦ ، ٢٧٠٧ ﴾

213. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह से पनाह मांगा करो आजमाइश की मशक्कत, बदबख्ती की पस्ती, बुरे खात्मे और दुश्मन के हंसने से। (बुखारी, 6616, मुस्लिम, 2707)

٢١٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((السَّفَرُ قِطْعَةٌ مِنْ الْعَذَابِ ؛ يَمْنَعُ أَحَدَكُمْ نَوْمَهُ ، وَطَعَامَهُ ، وَشَرَابَهُ ، فَإِذَا قَضَى أَحَدُكُمْ نَهْمَتَهُ فَلْيُعَجِّلْ إِلَى أَهْلِهِ)) ﴿ متفق عليه:١٩٢٧،٣٠٠١﴾

214. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सफर अज़ाब का एक टुकड़ा है, वह तुमको सोने से खाने से और पीने से रोकता है तो जब तुम्हारा मक़सद पूरा हो जाये तो अपने घर की तरफ जल्दी लौट आओ। (बुखारी, 1927 मुस्लिम, 3001)

٢١٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ فَمَنْ رَغِبَ عَنْ أَبِيهِ فَهُوَ كُفْر)) ﴿ متفق عليه: ٦٢،٦٧٦٨﴾

215. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने बाप से मुंह न फेरो जिसने अपने बाप से मुंह मोड़ा तो उसने कुफ्र किया। (बुखारी, 62 मुस्लिम, 6768)

٢١٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا أَذِنَ اللهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسَنِ الصَّوْتِ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ)) ﴿متفق عليه: ٧٥٤٤ ، ٧٩٢ – وهذا لفظ مسلم﴾

216. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला किसी चीज़ को इतने ध्यान से नहीं सुनता जितने ध्यान से अच्छी आवाज़ से पढ़ने पर नबी के कुरआन मजीद को सुनता है (बुखारी, 7544 मुस्लिम, 792 यह शब्द मुस्लिम के हैं)

٢١٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كَانَ لِي مِثْلُ أُحُدٍ ذَهَبًا ، مَا يَسُرُّنِي أَنْ لَا يَمُرَّ عَلَيَّ ثَلَاثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ شَيْءٌ، إِلَّا شَيْءٌ أُرْصِدُهُ لِدَيْنٍ))

﴿ متفق عليه: ٢٣٨٩، ٩٩١ ﴾

217. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तब भी मुझे यह पसन्द नहीं कि तीन दिन गुज़र जाये और उसका कोई हिस्सा मेरे पास रह जाये सिवाय उसके जो मैं कर्ज देने के लिये छोड़ दूं। (बुखारी, 2389 मुस्लिम, 991)

٢١٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَقَابُ قَوْسٍ فِي الجَنَّةِ ، خَيْرٌ مِمَّا تَطْلُعُ عَلَيْهِ الشَّمْسُ وَتَغْرُبُ)) ﴿ متفق عليه: ٢٧٩٣، ٩٩١ ﴾

218. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नत में एक कमान (हाथ) की जगह दुनिया

की उन तमाम चीज़ों से बेहतर है जिन में सूरज निकलता और डूबता है। (बुखारी, 2793 मुस्लिम, 991)

٢١٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: يَشْتِمُنِي ابْنُ آدَمَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ أَنْ يَشْتِمَنِي ، وَيُكَذِّبُنِي وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ، أَمَّا شَتْمُهُ فَقَوْلُهُ: إِنَّ لِي وَلَدًا ، وَأَمَّا تَكْذِيبُهُ فَقَوْلُهُ: لَيْسَ يُعِيدُنِي كَمَا بَدَأَنِي)) ﴿ البخاري: ٣١٩٣ ﴾

219. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला कहता है कि आदम की औलाद मुझे गाली देती है और उसके लिये यह उचित नहीं कि वह मुझे गाली दे, वह मुझे झुठलाते है और उसके लिये यह उचित नहीं कि वह मुझे झुठलाये। उसकी गाली यह है कि वह कहता है कि मेरे पास बेटा है और उसका झुठलाना यह है कि वह कहता है कि जिस तरह से अल्लाह ने मुझे पहली बार पैदा किया था दोबारा वह मुझे जिन्दा नहीं कर सकेगा। (बुखारी, 3193)

٢٢٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لَا يَدْخُلُ أَحَدٌ الجَنَّةَ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنْ النَّارِ لَوْ أَسَاءَ ؛ لِيَزْدَادَ شُكْرًا، وَلَا يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ إِلَّا أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنْ الجَنَّةِ لَوْ أَحْسَنَ ؛ لِيَكُونَ عَلَيْهِ حَسْرَةً) ﴿ البخاري: ٦٥٦٩ ﴾

220. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फरमायाः जन्नत में जो भी दाखिल होगा उसको जहन्नम का ठिकाना भी दिखाया जायेगा कि अगर नाफरमानी की होती तो वहां उसे जगह मिलती ताकि वह और ज़्यादा शुक्र अदा करे और जो भी जहन्नम में दाखिल होगा उसे उसके जन्नत का ठिकाना भी दिखाया जायेगा कि अगर अच्छे अमल किये होते तो वहां जगह मिलती ताकि उसके लिये हसरत और अफसोस का सबब बने। (बुखारी, 6569)

٢٢١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَخَذَ أَمْوَالَ النَّاسِ يُرِيدُ أَدَاءَهَا ، أَدَّى اللهُ عَنْهُ ، وَمَنْ أَخَذَ يُرِيدُ إِتْلَافَهَا أَتْلَفَهُ اللهُ﴾ البخاري: ٢٣٨٧﴾

221. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोगों के माल को देने के इरादे से लेता है तो अल्लाह तआला अदा करवा देता है और जो लोगों के माल को न देने के इरादे से लेता है तो अल्लाह तआला उसके माल को खत्म कर देता है। (बुखारी, 2387)

٢٢٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ تَعَالَى: ثَلَاثَةٌ أَنَا خَصْمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: رَجُلٌ أَعْطَى بِي ثُمَّ غَدَرَ ، وَرَجُلٌ بَاعَ حُرًّا فَأَكَلَ ثَمَنَهُ ، وَرَجُلٌ اسْتَأْجَرَ أَجِيرًا فَاسْتَوْفَى مِنْهُ وَلَمْ يُعْطِهِ أَجْرَهُ)) ﴾ البخاري: ٢٢٧٠﴾

222. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः कि अल्लाह कहता है, तीन किस्म के लोग ऐसे हैं जिनका मैं क़यामत के दिन खुद मुददई बनूंगा एक तो वह शख्स जिसने मेरे नाम पर अहद (वादा) किया और फिर वादा खिलाफी की। दूसरा वह शख्स जिसने किसी आज़ाद आदमी को बेच कर उसकी कीमत को खा लिया और तीसरा वह शख्स जिसने किसी से मजदूरी करवायी काम उससे पूरा पूरा लिया लेकिन उसकी मजदूरी नहीं दी। (बुखारी, 2770)

٢٢٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ قَالَ (كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَعْتَكِفُ فِي كُلِّ رَمَضَانٍ عَشْرَةَ أَيَّامٍ فَلَمَّا كَانَ الْعَامُ الَّذِي قُبِضَ فِيهِ اعْتَكَفَ عِشْرِينَ يَوْمًا) ﴿البخاري:٢٠٤٤﴾

223. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ान में हर साल दस दिनों का एतेकाफ करते थे लेकिन जिस साल आप का इन्तेकाल हुआ उस साल बीस दिनों का एतेकाफ किया था। (बुखारी, 2044)

٢٢٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((أَلَا أَدُلُّكُمْ عَلَى مَا يَمْحُو اللهُ بِهِ الخَطَايَا وَيَرْفَعُ بِهِ الدَّرَجَاتِ)) قَالُوا: بَلَى يَا رَسُولَ الله ، قَالَ: ((إِسْبَاغُ

الْوُضُوءِ عَلَى الْمَكَارِهِ ، وَكَثْرَةُ الْخُطَا إِلَى الْمَسَاجِدِ ، وَانْتِظَارُ الصَّلَاةِ بَعْدَ الصَّلَاةِ، فَذَلِكُمْ الرِّبَاطُ)) ﴿ مسلم:٢٥١ ﴾

224. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्या मैं तुमको न बतलाऊं वह बातें जिनसे गुनाह मिट जाती हैं और दर्जे बुलन्द हो जाते हैं। लोंगों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल क्यों नहीं जरुर बताइये तो आपने फरमायाः तक्लीफ की हालत में पूरा पूरा वुजू करना, और घर से मस्जिद दूर होने के बावजूद मस्जिद बार बार जाना, एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इनतेज़ार करना, यही रिबात ½अल्लाह के सीमा पर रखवाली½ है। (मुस्लिम, 251)

٢٢٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَطَهَّرَ فِي بَيْتِهِ ثُمَّ مَشَى إِلَى بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ الله ؛ لِيَقْضِيَ فَرِيضَةً مِنْ فَرَائِضِ الله؛ كَانَتْ خَطْوَتَاهُ إِحْدَاهُمَا تَحُطُّ خَطِيئَةً، وَالْأُخْرَى تَرْفَعُ دَرَجَةً)) ﴿ مسلم:٦٦٦ ﴾

225. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने अपने घर में पाकी (पवित्रता) हासिल की फिर अल्लाह के घरों में से किसी घर की तरफ गया ताकि अल्लाह के फराइज में से किसी फरीजे को पूरा करे। तो

एक कदम से उसकी गलतियों को मिटा देता है और दूसरे उसके दर्जे को बुलन्द कर देता है। (मुस्लिम 666)

٢٢٦- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((رَغِمَ أَنْفُ ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ ، ثُمَّ رَغِمَ أَنْفُ)) قِيلَ: مَنْ يَا رَسُولَ الله ؟ قَالَ: ((مَنْ أَدْرَكَ أَبَوَيْهِ عِنْدَ الْكِبَرِ ، أَحَدَهُمَا أَوْ كِلَيْهِمَا ، فَلَمْ يَدْخُلِ الجَنَّةَ)) ﴿ مسلم:٢٥٥١ ﴾

226. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः उसकी नाक धूल धूसरित (खाक आलूद) हो उसकी नाक खाक आलूद हो उसकी नाक खाक आलूद हो पूछा गया ऐ अल्लाह के रसूल किस की नाक खाक आलूद हो? फरमायाः जिसने अपने मां बाप में किसी एक को या दोनों को बुढ़ापे में पाया और उनकी खिदमत ना करके जन्नत में नहीं जा सका। (मुस्लिम, 2551)

٢٢٧- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَابَ قَبْلَ أَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا ، تَابَ اللهُ عَلَيْهِ)) ﴿ مسلم: ٢٧٠٣ ﴾

227. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने सूरज के पश्चिम से निकलने से पहले तौबा कर ली तो अल्लाह उसकी तौबा को कुबूल कर लेगा। (मुस्लिम, 2703)

٢٢٨- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((كَافِلُ الْيَتِيمِ لَهُ أَوْ لِغَيْرِهِ أَنَا وَهُوَ كَهَاتَيْنِ فِي الجَنَّةِ)) وَأَشَارَ مَالِكٌ بِالسَّبَّابَةِ وَالْوُسْطَى . ﴿ مسلم:٢٩٨٣ ﴾

228. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः यतीम की किफालत (देख भाल) करने वाला चाहे उसके खानदान का हो या दूर का हो मैं और किफालत करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे। और इमाम मालिक ने शहादत की उंगली और बीच की उंगली की तरफ इशारा किया। (मुस्लिम, 2983)

٢٢٩- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((أَحَبُّ الْبِلَادِ إِلَى الله مَسَاجِدُهَا ، وَأَبْغَضُ الْبِلَادِ إِلَى الله أَسْوَاقُهَا)) ﴿ مسلم: ٦٧١ ﴾

229. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक आबादियों में सब से प्रिय जगह मसाजिद हैं और सबसे अप्रिय जगह बाज़ार है। (मुस्लिम, 671)

٢٣٠- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((مَا اجْتَمَعَ قَوْمٌ فِي بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ الله ، يَتْلُونَ كِتَابَ الله وَيَتَدَارَسُونَهُ بَيْنَهُمْ ، إِلَّا نَزَلَتْ عَلَيْهِمْ السَّكِينَةُ ،

وَغَشِيَتْهُمْ الرَّحْمَةُ ، وَحَفَّتْهُمْ الْمَلَائِكَةُ ، وَذَكَرَهُمْ اللهُ فِيمَنْ عِنْدَهُ)

﴿ مسلم:٢٦٩٩ ﴾

230. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो लोग अल्लाह के घर में जमा हो कर अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और एक दूसरे को सिखाते हैं तो अल्लाह उनपर अम्न व सुख नाजिल करता है और अल्लाह की रहमत उनको ढांप लेती है और फरिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह उनका जिक्र करता है जो उसके पास होते हैं। (मुस्लिम, 2699)

٢٣١- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا تَشَهَّدَ أَحَدُكُمْ فَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ مِنْ أَرْبَعٍ يَقُولُ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ)) ﴿ مسلم: ٥٨٨ ﴾

231. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई तशह्हुद में जाये तो अल्लाह से चार चीज़ों से पनाह मांगे यह कहेः
अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ू बिक मिन अजाबि जहन्नम व मिन अजाबिल कबरी व मिन फितनतिल महया वल ममाती व मिन शर–री फितनतिल मसीहिद दज्जाल, ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह में आता हुं कबर और जहन्नम के अजाब से

मौत और जिन्दगी के फितने से और दज्जाल के फितने से तेरी पनाह में आता हुं (मुस्लिम, 588)

٢٣٢- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (إِذَا قَالَ الرَّجُلُ هَلَكَ النَّاسُ فَهُوَ أَهْلَكُهُمْ)﴿ مسلم: ٢٦٢٣﴾

232. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब आदमी कहता है लोग हलाक हो गये तो उसने लोगों को हलाक कर दिया। (मुस्लिम, 2623)

٢٣٣- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَلْيَأْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَلْيُكَفِّرْ عَنْ يَمِينِهِ)﴿ مسلم: ١٦٥٠﴾

233. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी बात पर क़सम खाई फिर कोई दूसरी चीज़ उससे बेहतर देखी तो बेहतर को अंजाम दे और अपनी क़सम का कफ्फारा अदा कर दे। (मुस्लिम, 1650)

٢٣٤- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: (خَيْرُ يَوْمٍ طَلَعَتْ عَلَيْهِ الشَّمْسُ يَوْمُ الْجُمُعَةِ ، فِيهِ خُلِقَ آدَمُ ، وَفِيهِ أُدْخِلَ الْجَنَّةَ، وَفِيهِ أُخْرِجَ مِنْهَا)﴿ مسلم: ٨٥٤﴾

234. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सबसे बेहतर दिन जिस पर सूरज निकला वह जुमा का दिन है इसी दिन आदम को पैदा किया गया इसी दिन जन्नत में दाखिल किया गया और इसी दिन जन्नत से आदम को निकाला गया। (मुस्लिम, 854)

٢٣٥- عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ ﷺ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دُعِيَ أَحَدُكُمْ فَلْيُجِبْ ، فَإِنْ كَانَ صَائِمًا فَلْيُصَلِّ ، وَإِنْ كَانَ مُفْطِرًا فَلْيَطْعَمْ ﴿ مسلم:١٤٣١﴾

235. अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब कोई तुमको दावत दे तो उसको कुबूल करो अगर रोज़ेदार हो तो दुआ दे और अगर रोज़े से न हो तो खाना खा ले। (मुस्लिम, 1431)

٢٣٦- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: (إِنَّ أَبْغَضَ الرِّجَالِ إِلَى الله الْأَلَدُّ الخَصِمُ) ﴿ متفق عليه: ٤٥٢٣ ، ٢٤٥٧﴾

236. आइशा रजिअल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह के नजदीक लोगों में सबसे ज्यादा नापसन्द (अप्रिय) वह है जो सख्त झगड़ालू हो। (बुखारी, 4523 मुस्लिम, 2457)

٢٣٧- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ فِي رُكُوعِهِ وَسُجُودِهِ :(سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَبِحَمْدِكَ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ﴾ متفق عليه: ٤٢٩٣ ، ٤٤٨﴿

237. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रूकूअ और सजदों में कहते थे सुबहान कल्ला हुम्म रब्बना व बिहमदिक अल्लाहुम्मग फिरली (बुखारी, 4293, मुस्लिम, 448)

٢٣٨- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلًا) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ الله الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ ، فَقَالَ: الْأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يُهِمَّهُمْ ذَاكَ) ﴾ متفق عليه: ٦٥٢٧ ، ٢٨٥٩﴿

238. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम नंगे पांव नंगे शरीर और बिना खतना के उठाये जाओगे। आइशा बयान करती हैं कि मैंने पूछा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मर्द और औरतें एक दूसरे को देखेंगे आप ने फरमायाः उस वक्त मामला बहुत सख्त होगा कोई इसका ख्याल भी नहीं कर सकेगा। (बुखारी, 6527 मुस्लिम, 2859)

٢٣٩- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (مَا خُيِّرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلَّا أَخَذَ أَيْسَرَهُمَا ، مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمًا ، فَإِنْ كَانَ إِثْمًا، كَانَ أَبْعَدَ النَّاسِ مِنْهُ) ﴿ متفق عليه:٦١٢٦ ، ٣٥٦٠﴾

239. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो जायज मामलों में उसी को अपनाते थे जो सबसे ज्यादा आसान होता था और जिस में गुनाह का मामला नहीं होता था अगर गुनाह का मामला हो तो आप उससे लोगों में सबसे ज्यादा दूर रहते थे। (बुखारी 6126, मुस्लिम 3260)

٢٤٠- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ خُذُوا مِنَ الْأَعْمَالِ مَا تُطِيقُونَ ، فَإِنَّ اللهَ لَا يَمَلُّ حَتَّى تَمَلُّوا ، وَإِنَّ أَحَبَّ الْأَعْمَالِ إِلَى اللهِ مَا دَامَ وَإِنْ قَلَّ))﴿ متفق عليه: ٥٨٦٢ ، ٧٨٢﴾

240. आइशा रज़ियल्लाहु रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः लोगों अमल उतना ही करो जितना करने की ताकत हो बेशक अल्लाह तआला थकता नहीं है जब तक तुम अमल से थक न जाओ और अल्लाह के नजदीक सबसे प्रिय अमल वह है जिसको पाबन्दी से हमेशा किया जाये चाहे वह कम ही क्यु ना हो। (बुखारी 5862 मुस्लिम 782)

٢٤١- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: لَوْ أَدْرَكَ رَسُولُ الله ﷺ مَا أَحْدَثَ النِّسَاءُ لَمَنَعَهُنَّ الْمَسْجِدَ كَمَا مُنِعَتْ نِسَاءُ بَنِي إِسْرَائِيلَ) ﴿ متفق عليه:٤٤٥،٨٦٩ ﴾

241. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब यह मालूम होता कि औरतों की तरफ से क्या नई बात पैदा हो जायेगी तो उनको मस्जिदों में जाने से मना कर देते जिस तरह बनी इस्राईल की औरतों को मना कर दिया गया था। (बुखारी 5862 मुस्मिल 782)

٢٤٢- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ (مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مُنْذُ قَدِمَ الْمَدِينَةَ مِنْ طَعَامِ بُرٍّ ثَلَاثَ لَيَالٍ تِبَاعًا حَتَّى قُبِضَ ﴿ متفق عليه: ٢٩٧٠،٦٤٥٤ ﴾

242. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि आले मुहम्मद मदीना आने के बाद निरन्तर तीन रात तक गेहूं से बना खाना नहीं खाया यहां तक कि आप का इन्तेकाल हो गया। (बुखारी 6445 मुस्लिम 2970)

٢٤٣- عَنْ عَـائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: مَا مِنْ شَيْءٍ يُصِيبُ الْمُؤْمِنَ حَتَّى الشَّوْكَةِ تُصِيبُهُ ، إِلَّا كَتَبَ اللهُ لَهُ بِهَا حَسَنَةً أَوْ حُطَّتْ عَنْهُ بِهَا خَطِيئَةٌ ﴿ متفق عليه: ٥٦٤٠، ٢٥٧٣ ﴾

243. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो

मुसीबत भी किसी मोमिन को पहुंचती है यहां तक कि कोई कांटा भी चुभता है तो उसके बदले में अल्लाह एक नेकी लिख देता है या उसके बदले में एक गुनाह मिटा दिया जाता है। (बुखारी 5640 मुस्लिम 2573)

٢٤٤- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ الله ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ نَفَثَ فِي كَفَّيْهِ بِـ: قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ وَبِالْمُعَوِّذَتَيْنِ جَمِيعًا ، ثُمَّ يَمْسَحُ بِهِمَا وَجْهَهُ ، وَمَا بَلَغَتْ يَدَاهُ مِنْ جَسَدِهِ ، يَفْعَلُ ذَلِكَ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ) ﴿ البخاري: ٥٠١٨، ٥٧٤٨

244. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हथेलियों पर क़ुल हुवल्लाहो अहद और सूरे मऊज़तैन पढ़कर दम करते फिर दोनों हाथों को अपने चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ पहुंच जाता उस पर फेरते आप इस तरह तीन बार करते थे। (बुखारी 5748 मुस्लिम 5018)

٢٤٥- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (يَرْحَمُ اللهُ نِسَاءَ الْمُهَاجِرَاتِ الْأُوَلَ ؛ لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الْآيَةُ: ﴿ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَى جُيُوبِهِنَّ ﴾ أَخَذْنَ أُزُرَهُنَّ فَشَقَّقْنَهَا مِنْ قِبَلِ الحَوَاشِي فَاخْتَمَرْنَ بِهَا) ﴿ البخاري:٤٧٥٩ ﴾

245. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला उन औरतों पर रहम करे जिन्होंने पहले हिजरत

की थी जब अल्लाह ने यह आयत "और अपने दुपटटे अपने सीनों पर डाले रहा करें" नाज़िल की तो उन औरतों ने अपने तहबन्दों को दोनों किनारों से फाड़ कर उन की ओढ़नियां बना लीं। (बुखारी 4759)

٢٤٦- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (.كَانَ النبيُّ ﷺ إِذَا رَأَى المَطَرَ قَالَ: اللَّهُمَّ صَيِّبًا نَافِعًا) ﴿ البخاري: ١٠٣٢﴾

246. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब बारिश होती तो यह दुआ करते अल्लाहुम्म सैयियबन नाफिया "ऐ अल्लाह नफा पहुंचाने वाली बारिश बरसा"। (बुखारी 1032)

٢٤٧- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ الله ، إِنَّ لِي جَارَيْنِ فَإِلَى أَيِّهِمَا أُهْدِي ؟ قَالَ: ((إِلَى أَقْرَبِهِمَا مِنْكِ بَابًا)) ﴿ البخاري: ٢٢٥٩﴾

247. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि मैने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं मैं उन दोनों में से किस को हदया दूं आपने फरमायाः उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुम्हारे दरवाज़े से करीब हो। (बुखारी 2259)

٢٤٨- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: (.كَانَ رَسُولُ الله ﷺ يَقْبَلُ الهَدِيَّةَ وَيُثِيبُ عَلَيْهَا) ﴿ البخاري: ٢٥٨٥﴾

248. 248. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हदया कुबूल करते थे और इस पर दुआ भी देते थे। (बुखारी, 2585)

٢٤٩- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا عَصَفَتْ الرِّيحُ قَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَ مَا فِيهَا وَخَيْرَ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّ مَا فِيهَا وَشَرِّ مَا أُرْسِلَتْ بِهِ)) ﴿ مسلم:٨٩٩﴾

249. 248. आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब आंधी चलती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहते *"अल्लाहुम्म इन्नी असअलुक खैरहा व खैरा मा फीहा व खैरा मा उर सिलत बिही व अजूबिका मिन शर्रिहा व शर्रिमा फीहा व शर्रिमा उर सिलत बिहि'* (मुस्लिम, 899)

٢٥٠- عَنْ عَائِشَةَ رضي الله عنها ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:(الرَّحِمُ مُعَلَّقَةٌ بِالْعَرْشِ تَقُولُ مَنْ وَصَلَنِي وَصَلَهُ اللهُ ، وَمَنْ قَطَعَنِي قَطَعَهُ اللهُ ﴿ متفق عليه:٥٩٨٩، ٢٥٥٥﴾

250. 248. आइशा रजिअल्लाहु तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है वह कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे तोड़ेगा उसको अल्लाह भी तोड़ेगा। (बुखारी, 5989 मुस्लिम, 2555)

٢٥١- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((﴿ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴾ حَتَّى يَغِيبَ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ))

﴿ متفق عليه: ٤٩٣٨،٢٨٦٢ ﴾

251. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिस दिन लोग रब्बुल आलमीन के सामने खड़े होंगे तो तुममें से कोई भी अपने कान की लौ तक पसीने में डूब जायेगे। (बुखारी, 2862 मुस्लिम, 4938)

٢٥٢- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((إِذَا صَارَ أَهْلُ الجَنَّةِ إِلَى الجَنَّةِ ، وَأَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ ، جِيءَ بِالمَوْتِ حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الجَنَّةِ وَالنَّارِ ، ثُمَّ يُذْبَحُ ، ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ: يَا أَهْلَ الجَنَّةِ لَا مَوْتَ ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ لَا مَوْتَ ؛ فَيَزْدَادُ أَهْلُ الجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ ؛ وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حُزْنِهِمْ))

﴿ متفق عليه: ٦٥٤٨ ، ٢٨٥٠ ﴾

252. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब जन्नती जन्नत में चले जायेंगे और जहन्नमी जहन्नम में चले जायेंगे। तो मौत को लाया जायेगा फिर उसको जन्नत और जहन्नम के बीच रख कर जबह कर दिया जायेगा फिर एक आवाज़ लगाने वाला

आवाज़ लगायेगा ऐ जन्नत वालों अब तुम्हें मौत नहीं आयेगी और ऐ जहन्नम वालों अब तुम्हें मौत नहीं आयेगी यह सुन कर जन्नती और खुश हो जायेंगे और जहन्नमी और गमगीन हो जायेंगे। (बुखारी, 6548 मुस्लिम, 285)

٢٥٣- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: لَا تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، وَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِالله ﴿متفق عليه: ١٦٤٦، ٧٤٠١﴾

253. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम अपने बाप दादाओं की क़सम न खाओ, और जिसको कसम खाना हो तो वह अल्लाह की कसम खाये। (बुखारी, 1646 मुस्लिम, 7401)

٢٥٤- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((مَا حَقُّ امْرِئٍ مُسْلِمٍ لَهُ شَيْءٌ يُوصِي فِيهِ ، يَبِيتُ لَيْلَتَيْنِ إِلَّا وَوَصِيَّتُهُ مَكْتُوبَةٌ عِنْدَهُ)) ﴿متفق عليه: ٢٧٣٨، ١٦٢٧﴾

254. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी मुसलमान के लिये जिनके पास वसिय्यत का कोई भी माल हो दुरूस्त नहीं कि दो रात भी वसिय्यत को बगैर अदा किए लिख कर अपने पास महफूज़ रखे । (बुखारी, 2738 मुस्लिम, 1627)

٢٥٥- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا ، أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ، ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ))

﴿ متفق عليه: ٧١٠٨ ، ٢٨٧٩ ﴾

255. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब अल्लाह किसी कौम पर अज़ाब उतारता है तो अज़ाब उन सब पर आता है जो उस कौम में होते हैं फिर उनके आमाल के अनुसार उठाया जायेगा। (बुखारी, 7108 मुस्लिम, 2879)

٢٥٦- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: بُنِيَ الْإِسْلَامُ عَلَى خَمْسٍ: شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ الله ، وَإِقَامِ الصَّلَاةِ ، وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ ، وَالحَجِّ ، وَصَوْمِ رَمَضَانَ ﴿ متفق عليه:١٦،٨ ﴾

256. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर रखी गयी है इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, नमाज़ काइम करना, जकात देना, हज करना और रमज़ान के रोज़े रखना। (बुखारी, 16 मुस्लिम, 8)

٢٥٧- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهﷺ:السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيمَا أَحَبَّ وَكَرِهَ مَا لَمْ يُؤْمَرْ بِمَعْصِيَةٍ ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ ؛ فَلَا سَمْعَ وَلَا طَاعَةَ ﴿ متفق عليه:١٨٣٩،٧١٤٤﴾

257. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी एताअत करना जरूरी है उन चीज़ों में भी जिन्हें वह पसन्द करे और उनमें भी जिन्हें वह नापसन्द करे जब तक उसे गुनाह करने का हुक्म न दिया जाये कि जब उसे गुनाह करने का हुक्म दिया जाये तो न सुनना बाकी रहेगा न एताअत करना। (बुखारी, 7144, मुस्लिम, 1830)

٢٥٨- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا اللهُ : لَا يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الْأَرْحَامُ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلَّا اللهُ ، وَلَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلَّا اللهُ ، وَلَا يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلَّا اللهُ ﴿ البخاري: ٧٣٧٩﴾

258. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः गैब की पांच कुंजियां हैं जिन्हें केवल

अल्लाह ही जानता है मां के पेट में क्या है केवल अल्लाह जानता है, आने वाले कल में क्या होगा केवल अल्लाह ही जानता है बारिश कब होगी केवल अल्लाह जानता है किसी की मौत किस जगह होगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है और क्यामत कब काइम होगी सिर्फ अल्लाह जानता है। (बुखारी, 7379)

٢٥٩- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَخَذَ رَسُولُ الله ﷺ بِمَنْكِبِي فَقَالَ: كُنْ فِي الدُّنْيَا كَأَنَّكَ غَرِيبٌ أَوْ عَابِرُ سَبِيلٍ ﴿البخاري: ٦٤١٦﴾

259. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और फरमायाः तुम इस दुनिया में अजनबी या मुसाफिर की तरह रहो। (बुखारी, 6416)

٢٦٠- عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((لَوْ يَعْلَمُ النَّاسُ مَا فِي الْوَحْدَةِ مَا أَعْلَمُ ، مَا سَارَ رَاكِبٌ بِلَيْلٍ وَحْدَهُ)) ﴿البخاري:٢٩٩٨﴾

260. अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जितना मैं जानता हूं अगर लोगों को भी अकेले सफर की बुराइयों के बारे में इल्म होता तो कोई सवार रात में अकेला सफर नहीं करता। (बुखारी, 2998)

٢٦١- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ مَرَّ عَلَى صِبْيَانٍ فَسَلَّمَ عَلَيْهِمْ، وَقَالَ: (كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَفْعَلُهُ) ﴿ متفق عليه:٦٢٤٧،٢١٦٨ ﴾

261. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि कुछ बच्चों के पास से उनका गुज़र हुआ तो उन्होंने उन बच्चों को सलाम किया और फरमाया नबी सल्लाहु अलैहि वसल्लम भी ऐसे सलाम करते थे (बुखारी, 2168 मुस्लिम, 6247)

٢٦٢- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)) ﴿ متفق عليه: ٦٣٨٩ ، ٢٦٩٠ ﴾

262. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम अधिकतर यह दुआ पढ़ते थे "*अल्लाहुम्म रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतौं व फिल आखिरति हसनतौं व क़िना अजाबन्नार,* ऐ अल्लाह हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भलाई दे और जहन्नम की आग से बचाना" (बुखारी, 6389 मुस्लिम, 690)

٢٦٣- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (.كُنَّا نُسَافِرُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يَعِبْ الصَّائِمُ عَلَى الْمُفْطِرِ ، وَلَا الْمُفْطِرُ عَلَى الصَّائِمِ) ﴿ متفق عليه: ١٩٤٧،١١١٨ ﴾

263. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि हम नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ सफर करते थे तो रोज़ा रखने वाला रोज़ा न रखने वाले को बुरा नहीं समझता था और रोज़ा न रखने वाला रोजेदार को बुरा नहीं समझता था। (बुखारी, 1118, मुस्लिम, 1947)

٢٦٤- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ثَلَاثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلَاوَةَ الْإِيمَانِ: مَنْ كَانَ اللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا ، وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لَا يُحِبُّهُ إِلَّا لله ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ بَعْدَ أَنْ أَنْقَذَهُ اللهُ مِنْهُ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ)) ﴿ متفق عليه: ١٦، ٤٣ ﴾

264. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तीन आदतें ऐसी हैं जिनमें यह पायी जायें तो वह ईमान की मिठास को पालेगा अल्लाह और उसके रसूल उसके नजदीक सब से ज्यादा महबूब बन जायें वह किसी से मुहब्बत केवल अल्लाह की खुशी के लिये करे वह कुफ्र में वापस जाने को इस तरह बुरा समझे जिस तरह आग में डाले जाने को बुरा समझता है। (बुखारी, 16 मुस्लिम, 43)

٢٦٥- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَحَدٌ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يُحِبُّ أَنْ يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا وَلَهُ مَا عَلَى الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ ، إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ

يَرْجِعَ إِلَى الدُّنْيَا فَيُقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ ؛ لِمَا يَرَى مِنْ الْكَرَامَةِ)) ﴿ متفق عليه:٢٨١٧ ، ١٨٧٧﴾

265. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जन्नत में जाने के बाद कोई भी शख्स दुनिया में वापस आना पसन्द नहीं करेगा चाहे उसको सारी दुनिया मिल जाये लेकिन शहीद की यह तमन्ना होगी कि दुनिया में दुबारा जा कर अल्लाह की राह में दस बार कत्ल हो क्योंकि वह शहादत की इज्जत वहां देखता है। (बुखारी, 2817 मुस्लिम, 1877)

٢٦٦- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: عَطَسَ رَجُلَانِ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَشَمَّتَ أَحَدَهُمَا وَلَمْ يُشَمِّتِ الْآخَرَ ، فَقَالَ الرَّجُلُ: يَا رَسُولَ الله شَمَّتَّ هَذَا وَلَمْ تُشَمِّتْنِي ، قَالَ: ((إِنَّ هَذَا حَمِدَ اللهَ وَلَمْ تَحْمَدِ اللهَ)) ﴿ متفق عليه: ٦٢٣٥،٢٩٩١﴾

266. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः दो आदमियों ने छींका तो उन दोनों में से एक ने अलहम्दुल्लिाह कहा और दूसरे ने नहीं कहा तो एक आदमी ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल आप ने इसका जवाब दिया और आप ने मेरा जवाब नहीं दिया तो आपने

फरमाया तुम ने अलहम्दुल्लिाह कहा और इसने अलहम्दुल्लिाह नहीं कहा (बुखारी, 2991 मुस्लिम, 6235)

٢٦٧- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَزَالُ جَهَنَّمُ تَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ ، حَتَّى يَضَعَ رَبُّ الْعِزَّةِ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ)) ﴿ متفق عليه:٢٨٤٨،٦٦٦١ ﴾

267. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जहन्नम बराबर कहेगी "और चाहिये" लेकिन जब अल्लाह अपने पैर को उसमें रख देगा तो कहेगी बस बस तुम्हारी इज्जत की कसम एक हिस्सा दूसरे हिस्से को खाये जा रहा है (बुखारी, 2848 मुस्लिम, 6661)

٢٦٨- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ صَلَّى صَلَاتَنَا ، وَاسْتَقْبَلَ قِبْلَتَنَا ، وَأَكَلَ ذَبِيحَتَنَا ، فَذَلِكَ الْمُسْلِمُ الَّذِي لَهُ ذِمَّةُ الله وَذِمَّةُ رَسُولِهِ ، فَلَا تُخْفِرُوا اللهَ فِي ذِمَّتِهِ)) ﴿ البخاري: ٣٩١ ﴾

268. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी ही तरह किबला की तरफ मुंह किया और हमारे जबीहा को खाया तो वह मुसलमान है जिसके लिये अल्लाह और उसके

रसूल की पनाह है तो तुम अल्लाह और उसके रसूल की दी हुयी पनाह से ख्यानत न करो। (बुखारी, 391)

٢٦٩- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: (إِنَّكُمْ لَتَعْمَلُونَ أَعْمَالًا هِيَ أَدَقُّ فِي أَعْيُنِكُمْ مِنْ الشَّعَرِ إِنْ كُنَّا لَنَعُدُّهَا عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مِنْ الْمُوبِقَاتِ) ﴿البخاري: ٦٤٩٢﴾

269. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम ऐसा अमल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज्याादा बारीक है तुम उसे मामूली समझते हो (बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। (बुखारी, 6492)

٢٧٠- عن أَنَسِ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الْكَافِرَ إِذَا عَمِلَ حَسَنَةً أُطْعِمَ بِهَا طُعْمَةً مِنْ الدُّنْيَا ، وَأَمَّا الْمُؤْمِنُ فَإِنَّ اللهَ يَدَّخِرُ لَهُ حَسَنَاتِهِ فِي الْآخِرَةِ ، وَيُعْقِبُهُ رِزْقًا فِي الدُّنْيَا عَلَى طَاعَتِهِ)) ﴿ مسلم: ٢٨٠٨﴾

270. अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक काफिर जब दुनिया में कोई नेक काम करता है तो नेकी के बदले में उसको खाना खिलाया जाता है और जब मोमिन दुनिया में कोई काम करता है तो अल्लाह तआला

उसकी नेकियों को आखिरत के लिये जमा कर लेता है और उसकी फरमाबरदारी की वजह से तुरन्त उसको दुनिया में रोजी मिलती है (मुस्लिम, 2808)

٢٧١- عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنْ السُّلْطَانِ شِبْرًا ، مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)) ﴿ متفق عليه:١٨٤٩،٧٠٥٣﴾

271. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अपने अमीर में कोई बात ना पसन्द करे तो सब्र करे अगर कोई उसकी एताअत से बालिश्त बराबर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (बुखारी, 1849 मुस्लिम, 7053)

٢٧٢- عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَنْ صَوَّرَ صُورَةً فِي الدُّنْيَا ، كُلِّفَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا الرُّوحَ ، وَلَيْسَ بِنَافِخٍ)) ﴿ متفق عليه: ٢١١٠،٥٩٦٣﴾

272. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स दुनिया में कोई मूरत बनायेगा तो क्यामत के दिन उस पर जोर डाला जायेगा कि उसको जिन्दा भी

करे जब कि वह उसे जिन्दा नहीं कर पायेगा। (बुखारी, 2110 मुस्लिम, 5963)

٢٧٣- عن ابن عباس رضي الله عنهما أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اتَّقِ دَعْوَةَ الْمَظْلُومِ فَإِنَّهَا لَيْسَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ الله حِجَابٌ)) ﴿ متفق عليه: ١٩،٢٤٤٨

273. इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुआज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यमन भेजा तो फरमाया मजलूम की बददुआ से डरते रहना क्योंकि उसके और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं होता। (बुखारी, 2448 मुसिल्म, 19)

٢٧٤- عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا دَخَلَ عَلَى مَرِيضٍ يَعُودُهُ قَالَ: ((لَا بَأْسَ. طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)) ﴿ البخاري: ٥٦٥٦ ﴾

274. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी बीमार की इयादत के लिये जाते तो बीमार से कहते कि, ला बास तहूरून इन्शा अल्लाह, फिक्र की बात नहीं है इन्शाअल्लाह यह मर्ज गुनाहों से पाक करने वाला है। (बुखारी, 5656)

٢٧٥- عن ابن عباس رضي الله عنهما قَالَ: (.لَعَنَ رَسُولُ الله ﷺ الْمُتَشَبِّهِينَ مِنْ الرِّجَالِ بِالنِّسَاءِ ، وَالْمُتَشَبِّهَاتِ مِنْ النِّسَاءِ بِالرِّجَالِ) ﴿ البخاري:٥٨٨٩ ﴾

275. इब्ने अब्बास रजिअल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने औरत की मुशाबहत करने वाले मर्दों पर लानत की और मर्दों की मुशाबहत करने वाली औरतों पर लानत की। (बुखारी, 5889)

٢٧٦- عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلًا سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الْإِسْلَامِ خَيْرٌ قَالَ: ((تُطْعِمُ الطَّعَامَ ، وَتَقْرَأُ السَّلَامَ ، عَلَى مَنْ عَرَفْتَ ، وَمَنْ لَمْ تَعْرِفْ)) ﴿ متفق عليه: ١٢، ٣٩ ﴾

276. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कौन सा इस्लाम बेहतर है? फरमायाः खाना खिलाओ और सलाम करो जिनको तुम जानते हो और जिनको नहीं जानते हो। (बुखारी, 12 मुस्लिम, 39)

٢٧٧- عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ ، مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنْ اللَّبَنِ ، وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنْ الْمِسْكِ ، وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ ، مَنْ شَرِبَ مِنْهَا فَلَا يَظْمَأُ أَبَدًا)) ﴿ متفق عليه: ٢٢٩٢، ٦٥٧٩ ﴾

277. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरा हौज़ एक महीने की दूरी के बराबर होगा उसका पानी दूध से भी ज़्यादा सफेद होगा और उसकी खुश्बू मुश्क से भी ज्यादा अच्छी होगी और उसका प्याला (कूज़ा) आस्मान के सितारों की तरह होगा जो एक बार उससे पी ले गा कभी प्यासा नहीं होगा (बुखारी, 2292 मुस्लिम, 6579)

٢٧٨- عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ:

((مَنْ قَتَلَ مُعَاهَدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الجَنَّةِ وَإِنَّ رِيحَهَا تُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عَامًا)) ﴿البخاري: ٣١٦٦﴾

278. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी जिम्मी को नाहक़ कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पा सकेगा हालांकि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी, 3166)

٢٧٩- عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عَمْرِو بن العَاصِ.رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قالَ: قالَ النَّبِيُّ ﷺ:

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ أَسْلَمَ وَرُزِقَ كَفَافًا وَقَنَّعَهُ اللهُ بِمَا آتَاهُ ﴿مسلم: ١٠٥٤﴾

279. अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने फरमायाः वह शख्स कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया और उसको प्रयाप्त रोज़ी दे दी गयी और उसको अल्लाह ने जितना दिया उस पर कनाअत की। (मुस्लिम, 1054)

٢٨٠- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ وَالْإِمَامُ يَخْطُبُ فَلْيُصَلِّ رَكْعَتَيْنِ)) ﴿ متفق عليه: ٨٧٥، ١١٧٠﴾

280. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई जुमा के दिन आये और इमाम खुतबा दे रहा हो तो वह दो रकअत नमाज़ पढ़ ले। (बुखारी, 1170 मुस्लिम, 875)

٢٨١- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: (نَهَى رَسُولُ الله ﷺ أَنْ يُجَصَّصَ الْقَبْرُ، وَأَنْ يُقْعَدَ عَلَيْهِ، وَأَنْ يُبْنَى عَلَيْهِ) ﴿ مسلم: ٩٧٠﴾

281. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने कब्र को पक्का बनाने उस पर बैठने और उस पर मकान बनाने से मना किया। (मुस्लिम, 970)

٢٨٢- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((لَا تَدْعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَوْلَادِكُمْ وَلَا تَدْعُوا عَلَى أَمْوَالِكُمْ لَا تُوَافِقُوا مِنْ الله سَاعَةً يُسْأَلُ فِيهَا عَطَاءٌ فَيَسْتَجِيبُ لَكُمْ)) ﴿ مسلم: ٣٠١٤﴾

282. जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः खुद को अपने औलाद को और अपने माल के लिये बददुआ न करो क्योंकि एक घड़ी ऐसी होती है जिसमें अल्लाह तुम्हारी दुआ को कुबूल कर लेता है। (मुस्लिम, 3014)

٢٨٣- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((لَا يَمُوتَنَّ أَحَدُكُمْ إِلَّا وَهُوَ يُحْسِنُ الظَّنَّ بِالله عَزَّ وَجَلَّ)) ﴿مسلم:٢٨٧٧﴾

283. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम में कोई मरे तो अल्लाह के बारे में उसका गुमान अच्छा हो। (मुस्लिम, 2877)

٢٨٤- عَن جَابِرِ بْنِ عَبْدِ الله رَضْيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ قَدْ أَيِسَ أَنْ يَعْبُدَهُ الْمُصَلُّونَ فِي جَزِيرَةِ الْعَرَبِ وَلَكِنْ فِي التَّحْرِيشِ بَيْنَهُمْ ﴿مسلم:٢٨١٢﴾

284. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक शैतान इस बात से मायूस हो चुका हे कि जजीरए अरब के मुसलमान उसकी इबादत करें और लेकिन उनके बीच में झगड़ा और फितना पैदा करने में लगा हुआ है। (मुस्लिम, 2812)

٢٨٥- عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قال: قال النَّبِيُّ ﷺ : ((اشْفَعُوا تُؤْجَرُوا وَيَقْضِي اللهُ عَلَى لِسَانِ نَبِيِّهِ مَا شَاءَ)) ﴿ متفق عليه:٢٦٢٧، ١٤٢٢﴾

285. जबिर बिन अब्दुल्लाह बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः सिफारिश करो इस पर तुम को सवाब मिलेगा और अल्लाह तआला अपने नबी की जुबान के जरिये जो चाहेगा पूरा करेगा। (बुखारी, 1422 मुस्लिम, 2627)

٢٨٦- عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قال: قال النَّبِيُّ ﷺ : ((مَثَلُ الجَلِيسِ الصَّالِحِ وَالسَّوْءِ كَحَامِلِ الْمِسْكِ وَنَافِخِ الْكِيرِ ، فَحَامِلُ الْمِسْكِ إِمَّا أَنْ يُحْذِيَكَ ، وَإِمَّا أَنْ تَبْتَاعَ مِنْهُ ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ مِنْهُ رِيحًا طَيِّبَةً ، وَنَافِخُ الْكِيرِ ، إِمَّا أَنْ يُحْرِقَ ثِيَابَكَ ، وَإِمَّا أَنْ تَجِدَ رِيحًا خَبِيثَةً)) ﴿ متفق عليه: ٢٦٢٨، ٢١٠١﴾

286. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अच्छे और बुरे साथी की मिसाल खुश्बू बेचने वाले और लोहार की तरह है। खुश्बू बेचने वाला या तो तुम को सुंघा देगा या तो तुम उस से खरीद लोगे या उससे अच्छी खुश्बू पाओगे। और लोहार या तो तुम्हारे कपड़े को जला देगा या बदबूदार बू मिलेगी। (बुखारी, 2628 मुस्लिम, 2101)

٢٨٧- عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: سَمِعَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلًا يُثْنِي عَلَى رَجُلٍ وَيُطْرِيهِ فِي مَدْحِهِ ، فَقَالَ: ((أَهْلَكْتُمْ ، أَوْ قَطَعْتُمْ ظَهَرَ الرَّجُلِ))

﴿ متفق عليه: ٢٦٦٣، ٣٠٠١ ﴾

287. अबू मूसा रजिअल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना कि एक आदमी दूसरे आदमी की तारीफ कर रहा था और उसकी तारीफ में मुबालगा (बढ़ा चढ़ा कर) बात कर रहा था तो आप ने फरमाया तुम लोगों ने उस शख्स को हलाक कर दिया या उसकी पीठ को तोड़ दिया। (बुखारी, 2663 मुस्लिम, 3001)

٢٨٨- عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلَا أَدُلُّكَ عَلَى كَلِمَةٍ هِيَ كَنْزٌ مِنْ كُنُوزِ الجَنَّةِ : لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِالله))

﴿ متفق عليه: ٢٧٠٤، ٦٣٨٤ ﴾

288. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझ से फरमायाः क्या मैं तुम्हें एक ऐसा कलिमा न बताऊं जो जन्नत के खजानों में से एक खजाना है और वह यह है ''ला हौला वला कुव्वता इल्लाह बिल्लाह''। (बुखारी 2704 मुस्लिम 6384)

٢٨٩- عَنْ أَبِي مُوسَى ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((مَنْ أَحَبَّ لِقَاءَ الله أَحَبَّ اللهُ لِقَاءَهُ وَمَنْ كَرِهَ لِقَاءَ الله كَرِهَ اللهُ لِقَاءَهُ))

﴿ متفق عليه: ٦٥٠٨، ٢٦٨٦ ﴾

289. अबू मूसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अल्लाह से मिलना पसन्द करता है अल्लाह भी उससे मिलना पसन्द करता है और जो शख्स अल्लाह से मिलना नापसन्द करता है अल्लाह भी उससे मिलना पसन्द नहीं करता है। (बुखारी, 6508 मुस्लिम, 2686)

٢٩٠- عَنْ أَبِي بَكْرَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَكِلَاهُمَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) قِيلَ: فَهَذَا الْقَاتِلُ ، فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ ؟ قَالَ: ((إِنَّهُ أَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ)) ﴿ متفق عليه:٧٠٨٣، ٢٨٨٨ ﴾

290. अबू बकरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी, 7083 मुस्लिम, 2888)

٢٩١- عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ ﷺ قالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الْعَمَلِ أَحَبُّ إِلَى اللهِ؟ قَالَ: ((.الصَّلَاةُ عَلَى وَقْتِهَا)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((.بِرُّ الْوَالِدَيْنِ)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ ؟ قَالَ: ((.الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ)) ﴿ متفق عليه:٥٩٧٠، ٨٥﴾

291. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा अल्लाह के यहां सबसे ज्यादा महबूब अमल क्या है? फरमाया नमाज़ को वक्त पर पढ़ना मैंने पूछा फिर कौन सा अमल, फरमाया मां बाप के साथ भलाई से पेश आना, मैंने पूछा फिर कौन सा अमल, फरमाया अल्लाह की राह में जिहाद करना। (बुखारी, 597 मुस्लिम, 85)

٢٩٢- عن عَرْفَجَةَ بن شُرَيْحٍ ﷺ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ الله ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّهُ سَتَكُونُ هَنَاتٌ وَهَنَاتٌ ، فَمَنْ أَرَادَ أَنْ يُفَرِّقَ أَمْرَ هَذِهِ الْأُمَّةِ وَهِيَ جَمِيعٌ فَاضْرِبُوهُ بِالسَّيْفِ كَائِنًا مَنْ كَانَ)) ﴿ مسلم: ١٨٥٢ ﴾

292. अर्फजा बिन शुरैह बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुनाः बेशक नये नये फितने पैदा होंगे तो जो शख्स इस उम्मत को बांटने की कोशिश करे जब कि वह लोग एकजुट हों तो ऐसे शख्स को तलवार से मार दो। इस मामले में कोई भी हो। (मुस्लिम, 1852)

٢٩٣- عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي فَلَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ أَنْفَقَ مِثْلَ أُحُدٍ ذَهَبًا مَا بَلَغَ مُدَّ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفَهُ)) ﴿ متفق عليه: ٣٦٧٣، ٢٥٤١ ﴾

293. अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे असहाब को गाली मत दो अगर कोई शख्स उहुद पहाड़ के बराबर सोना भी खर्च कर डाले तो उनके एक मुद गल्ला के बराबर भी नहीं पहुंच सकता और न उनके आधे मुद के बराबर। (मुस्लिम, 3637 मुस्लिम, 2541)

٢٩٤- عن النُّعمَانِ بنِ بَشِيرٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ عَلَى أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَتَانِ يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ كَمَا يَغْلِي الْمِرْجَلُ وَالْقُمْقُمُ)) ﴿ متفق عليه: ٦٥٦٢ ، ٢١٣ ﴾

294. नौमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन सबसे हलका अज़ाब उस जहन्नमी शख्स को होगा जिसके दोनों पांव के तलवों में केवल आग की जूतियां होंगी जिसकी वजह से उसका दिमाग खौलेगा जिस तरह से मिरजल (हांडी) और कुमकुम (बर्तन का नाम) खौलता है। (बुखारी, 6522 मुस्लिम, 213)

٢٩٥- عَنْ أَبِي أَيُّوبَ الْأَنْصَارِيِّ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((لَا يَحِلُّ لِرَجُلٍ أَنْ يَهْجُرَ أَخَاهُ فَوْقَ ثَلَاثِ لَيَالٍ ، يَلْتَقِيَانِ فَيُعْرِضُ هَذَا وَيُعْرِضُ هَذَا ، وَخَيْرُهُمَا الَّذِي يَبْدَأُ بِالسَّلَامِ)) ﴿ متفق عليه: ٦٠٧٧، ٢٥٦٠ ﴾

295. अबू अय्यूब अनसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः किसी शख्स के लिये यह जाइज नहीं कि अपने किसी भाई से तीन दिन से ज्यादा बात करना छोड़ दे इस तरह कि जब दोनों का सामना हो जाये तो यह भी मुंह फेर ले और वह भी मुंह फेर ले और उन दोनों में बेहतर वह है जो सलाम में पहल करे। (बुखारी 6077 मुस्लिम 2560)

٢٩٦- عن عُمَرَ بْنَ أَبِي سَلَمَةَ ﷺ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولِ الله ﷺ: ((يَا غُلَامُ سَمِّ اللهَ وَكُلْ بِيَمِينِكَ وَكُلْ مِمَّا يَلِيكَ)) ﴿ متفق عليه:٥٣٧٦ ، ٢٠٢٢﴾

296. उमर बिन अबू सलमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुझे से कहाः ऐ लड़के खाना खाने से पहले बिस्मिल्लाह कहो और अपने दायें हाथ से खाओ और अपने सामने से खाओ। (बुखारी, 5376 मुस्लिम, 2022)

٢٩٧- عَنْ الْمُغِيرَةِ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ : ((إِنَّ كَذِبًا عَلَيَّ لَيْسَ كَكَذِبٍ عَلَى أَحَدٍ ، مَنْ كَذَبَ عَلَيَّ مُتَعَمِّدًا ، فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنْ النَّارِ))﴿ متفق عليه: ١٢٩١، ٤﴾

297. मुगीरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक मेरे ऊपर झूठ बांधना किसी दूसरे पर झूठ बांधने की तरह

नहीं है जिस ने मुझ पर जान बूझ कर झूठ बाधा तो उसने अपना ठिकाना जहन्नम मे बना लिया। (बुखारी, 1291 मुस्लिम, 4)

٢٩٨- عَنْ النَّوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْبِرُّ حُسْنُ الْخُلُقِ ، وَالْإِثْمُ مَا حَاكَ فِي صَدْرِكَ وَكَرِهْتَ أَنْ يَطَّلِعَ عَلَيْهِ النَّاسُ)) ﴿ مسلم: ٢٥٥٣﴾

298. नवास बिन समआन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम, 2553)

٢٩٩- عَنْ النَّوَّاسِ بْنِ سِمْعَانَ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يُؤْتَى بِالْقُرْآنِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَأَهْلِهِ الَّذِينَ كَانُوا يَعْمَلُونَ بِهِ تَقْدُمُهُ سُورَةُ الْبَقَرَةِ وَآلِ عِمْرَانَ)) ﴿ مسلم: ٨٠٥﴾

299. नवास बिन समआन रजिअल्लल्लाहु तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरह बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम, 805)

٣٠٠- عَنْ مَعْقِلِ بْنِ يَسَارٍ ﷺ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعِبَادَةُ فِي الْهَرْجِ كَهِجْرَةٍ إِلَيَّ)) ﴿ مسلم: ٢٩٤٨ ﴾

300. मअ्क़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत करने के समान है। (मुस्लिम, 2948)